मौसम बड़ा बेईमान है

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Cover Title : Mausam Bada Beeeman Hai (Weather is Naughty)
Cover Page picture : Winter and Spring
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.comCover
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
To read many such stories : https://www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

फरवरी 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4

मौसम बड़ा बेईमान है 5

1 बरफ की लड़की 7

2 पिता पाला 23

3 मार्च और चरवाहा 31

4 बरफ का आदमी और वसन्त का दूत 34

5 बरफ के आदमी की वापसी 38

6 वसन्त राजकुमारी 42

हवाओं की लोक कथाऐं 53

7 हवा का जन्म 55

8 एक लड़का और उत्तरी हवा 62

9 एक लड़का जो उत्तरी हवा के पास गया 69

10 उत्तरी हवा की भेंट 77

11 करामाती भेंटें 89

12 मिस उत्तरी हवा और मिस्टर ज़ैफिर 93

13 उत्तरी हवा और सूरज 95

14 सीधा आदमी और उसकी चालाक पत्नी 102

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

मौसम बड़ा बेईमान है

मौसम दुनियॉ का एक बहुत ही मुख्य विषय है। सारी दुनियॉ में अख़बार में रेडियो पर टैलीविजन पर सभी जगह मौसम का हाल बताया जाता है। अमेरिका और कैनेडा में तो लोग हर समय मौसम ही देखते रहते हैं – केवल उसी दिन का ही नहीं बल्कि हर घंटे का और हफ्ते भर तक का। और यह मौसम भी बड़ा बेईमान है इसका कोई ईमान धर्म ही नहीं। बारिश की सोच कर छाता ले कर चलो तो धूप निकल आती है। ठंड में बारिश हो जाती है।

सभी जानते हैं कि इसका आदमी जानवर पक्षी और पेड़ पौधों की ज़िन्दगी पर कितना असर पड़ता है। पर अक्सर लोक कथाओं में इसका वर्णन नहीं होता।

यहॉ हम कुछ ऐसी लोक कथाऐं दे रहे हैं जिनमें कुछ मौसमों का वर्णन है। इनको हमने यहॉ एक साथ इकट्ठा करने की कोशिश की है। तो लो पढ़ो ये कुछ लोक कथाऐं मौसम की.... इन कथाओं को पढ़ो और देखो कि देश विदेश की लोक कथाओं में मौसम का वर्णन किस प्रकार किया गया है और उनका इस दुनियॉ के जीवन पर क्या असर पड़ा है।

ये सारी लोक कथाऐं हमने तुम्हारे लिये बहुत सारी जगहों से ख़ास तौर पर इकट्ठी की हैं। क्या तुमने भी कोई मौसम की लोक कथा पढ़ी या सुनी है? अगर पढ़ी या सुनी हो तो हमको जरूर लिखना।

1 बरफ की लड़की[1]

मौसम की यह पहली लोक कथा एशिया महाद्वीप के रूस देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

उस समय आधी रात हो रही थी। पूरे चॉद की चॉदी जैसी किरणें सारी धरती पर पड़ रही थीं।

अचानक सारा आसमान उन चिड़ियों से भर गया जो गरम जगहों से वापस लौट आयी थीं। वहॉ वसन्त सारी धरती पर अपनी पूरी शान से आ गया था और वहॉ हंस और सारस[2] भी दिखायी देने लगे थे।

उनमें से एक चिड़िया फ़र[3] के पेड़ों से घिरे हुए एक खुले मैदान में उतरते हुए बोली — "उफ़, यहॉ कितना ठंडा है। ठंड ने तो यहॉ सब शाखाओं को कितना सख्त बना दिया है। घास के मैदानों में घास नहीं है, पेड़ सब चुपचाप नंगे और जमे पड़े हैं, पेड़ों के ठंडे तनों पर उनके गोंद जमे हुए लटके पड़े हैं।"

[1] Snowmaiden – a folktale from Russia, Asia. Adapted from the Book :
"Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

[2] Translated for the words "Swans and Cranes"

[3] Fir is a kind of evergreen tree which has conical leaves. It is used a s Christmas tree too. It is of several kinds, but one of its lind is shown here in the picture above.

वह कुछ देर के लिये वहाँ रुकी पर फिर वह ऊपर आसमान की तरफ देख कर बोली — "अपने ऊपर तो आसमान साफ है। चाँद तारों को देखो तो वे कितने प्यार से चमक रहे हैं पर इस धरती को देखो यह तो इतनी सख्ती से चमक रही है जैसे हीरे का हार।"

जब वह यह सब कह रही थी तो उसके असपास की सब चिड़ियें ठंड और शरम से काँप रही थीं।

वह चिड़िया फिर बोली — "मैं ही तुम्हारे इन सब दुखों की जड़ हूँ। सोलह साल पहले मैंने ही लाल नाक वाले पाले[4] से प्यार किया था। तभी से वह मेरे ऊपर राज कर रहा है।

क्योंकि हमारी एक बेटी है इसलिये मैं उसके खिलाफ भी नहीं जा सकती। वह उसको बहुत ही गहरे जंगल में अपने बरफ के महल में रखता है।

उसी की वजह से मैं उससे झगड़ने से भी डरती हूँ। और इसी वजह से हम लोग बहुत दुख में हैं – उफ़ यह बेरहम ठंड और जाता हुआ वसन्त का मौसम।"

सुन्दर वसन्त अपनी बेटी को बहुत प्यार करती थी। उसने अपनी बेटी के बारे में सोचते हुए एक लम्बी साँस भरी। तभी वह बड़ा सा बूढ़ा लाल नाक वाला पाला जंगल में से बाहर आया।

वह सुन्दर वसन्त से खुशी से बोला — "हलो ओ सुन्दर वसन्त।"

[4] Red-nosed Frost

सुन्दर वसन्त बोली — "हलो मिस्टर पाले। हमारी बेटी बरफ की बेटी कैसी है?"

पाला बोला — "वह बिल्कुल ठीक है। मैं उसको अपने बरफ के महल में अपने साथ ही रखता हूँ। अब तो वह इतनी बड़ी हो गयी है कि अब उसको किसी आया की भी जरूरत नहीं है।"

सुन्दर वसन्त ने उससे कुछ नाराज होते हुए कहा — "ओ बूढ़े, तुम किसी लड़की के दिल के बारे में कुछ नहीं जानते। वह अब सोलह साल की है। तुमको अब उसे जहाँ भी वह जाना चाहे वहाँ जाने देना चाहिये।"

बूढ़ा पाला बोला — "और सूरज उसको देख ले तो? क्या उसका दिल आदमियों के प्यार के लिये पिघल नहीं जायेगा? और फिर यारीलो सूरज देव[5] उसको अपने कब्जे में ले लेंगे।"

इस तरह से दोनों माता पिता रात भर जंगल मे बैठे बैठे अपनी बेटी की किस्मत का फैसला करते रहे कि उनको उसके बारे में क्या करना चहिये और फिर आखीर में एक नतीजे पर पहुँचे।

लाल नाक वाला पाला बोला — "मुझे मालूम है कि एक जवान लड़की को ठीक से देखभाल की जरूरत होती है पर क्योंकि तुम्हारे पास तो उसको देखने भालने का समय ही नहीं है इसलिये हम उसको ऐसे अच्छे दिल वाले किसानों की देखभाल में रख देंगे जो बहुत ही नम्र हों और जिनके अपना कोई बच्चा न हो।

[5] Yarilo the Sun God

वहाँ बरफ की लड़की के पास रोज के करने के लिये काफी काम होगा तो वह सपने देखना भी छोड़ देगी। इसके अलावा वहाँ उस पर किसी आदमी की निगाह भी नहीं पड़ेगी।"

सो बस यही तय रहा।

अगली सुबह एक बूढ़ा और उसकी पत्नी जंगल में अपनी अँगीठी में आग जलाने के लिये लकड़ी इकट्ठी करने आये। उस दिन क्योंकि वसन्त की छुट्टी थी सो वह बूढ़ा बहुत खुश था और बड़े उत्साह में था। वह गाना गाता चला आ रहा था और उसके पैर भी जमीन पर सीधे नहीं पड़ रहे थे।

पर उसकी पत्नी बहुत खुश नहीं थी। गाँव से आती बच्चों की आवाज उसको अच्छी नहीं लग रही थी क्योंकि उसको अपने शान्त घर की याद आ रही थी।

उस बूढ़े ने पत्नी से कहा — "अरे खुश रहा करो। मैं तुम्हें एक बात बताऊँ? चलो हम लोग यहाँ अपने लिये बरफ की एक बेटी बनाते हैं।"

बुढ़िया उसकी बेवकूफी पर गुस्सा हो गयी और उस पर चिल्लायी — "तुमको शरम नहीं आती? अगर लोग हमको ऐसे बच्चों वाले खेल खेलते देख लेंगे तो।"

बूढ़े ने उसकी बातों पर ध्यान न देते हुए नीचे पड़ी बरफ इकट्ठी करनी शुरू कर दी। पहले उसने बरफ का एक गोला बनाया फिर उसके बाँहें और टाँगें लगायीं और फिर उसके कन्धों पर सिर रखा।

उसके एक नाक लगायी और उसके चेहरे पर मुँह और ऑखें बना दीं।

जैसे ही वह यह बना कर चुका तो एक अजीब सी बात हुई जिससे दोनों बूढ़े पति पत्नी का मुँह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया।

उस बरफ की बनी लड़की के होठ तो लाल हो गये। उसकी ऑखें खुल गयीं। उसने प्यार से उस बूढ़े जोड़े की तरफ देखा और मुस्कुरायी। उसने अपने शरीर से अपनी बरफ झाड़ी और उस बरफ के ढेर में से बाहर निकल आयी – एक जीती जागती लड़की।

दोनों पति पत्नी तो उस ज़िन्दा लड़की को देख कर भौंचक्के रह गये। बूढ़े को लगा कि वह जो पी कर आया था शायद इसी लिये उसकी ऑखें उसके साथ चालें खेल रही थीं पर उसकी तो पत्नी भी उस लड़की को ही घूरे जा रही थी।

आखिर बूढ़ा बोला — "प्यारी बेटी, तुम्हारा नाम क्या है?"

लड़की बोली — "मेरा नाम बरफ की लड़की[6] है।"

बिना किसी हिचकिचाहट के वे उसको अपने घर ले गये। जब वह लड़की उनके साथ जा रही थी तो उसने मुड़ कर कहा — "विदा पिता जी, विदा मॉ, विदा मेरे जंगल के घर।"

पर क्या वह जंगल के पेड़ों की पत्तियों के हिलने की आवाज थी या फिर सचमुच में ही उस बरफ की लड़की की आवाज का

[6] Translated for the word "Snowmaiden"

किसी ने जवाब दिया — "विदा ओ बरफ की बेटी, विदा, विदा, विदा, विदा... ।"

उनको ऐसा लगा जैसे पेड़ों ने उसको झुक कर विदा दी और घनी झाड़ियों ने हट कर उसको जाने का रास्ता दिया।

समय गुजरता गया और वह बरफ की लड़की बड़ी होती गयी – दिन ब दिन नहीं, बल्कि हर घंटे। वह हर रोज पहले से भी बहुत ज़्यादा सुन्दर होती जाती थी।

उसकी खाल बरफ से भी ज़्यादा सफेद थी। उसके सफेद बाल सफेद राख जैसे थे या फिर चॉदी के बिर्च के पेड़[7] जैसे रंग के थे। उसकी ऑखें नीले आसमान से भी ज़्यादा नीली थीं।

उन बूढ़े पति पत्नी के पास उस बरफ की लड़की के लिये प्यार की कोई कमी नहीं थी। वे तो बस सारा दिन उसी को देखते रहते थे।

वह जब बड़ी हो गयी तो वह बहुत ही दयालु थी। वह घर में सारा काम करती थी। जब वह गाना गाती थी तो सारा गॉव उसका गाना सुनने के लिये रुक जाता था।

जल्दी ही वसन्त का मौसम आ गया और उसके साथ साथ आ गयी सूरज की धूप। धरती गरम होने लगी। बरफ की जो गन्दगी

[7] Silver Birch Tree – see its picture above.

पड़ी रह गयी थी उसके बीच में हरी हरी घास दिखायी दिखायी देने लगी और लार्क चिड़िया[8] गाने लगी।

इस धूप के आने से सब लोग बहुत खुश थे पर वह बरफ की लड़की बहुत दुखी थी। उसको दुखी देख कर उसके माता पिता ने पूछा — "क्या बात है बेटी, क्या तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है?"

लड़की फुसफुसाती हुई बोली — "नहीं मॉ मेरी तबियत ठीक है। पिता जी मेरी तबियत बिल्कुल ठीक है।"

धीरे धीरे पहले फूल खिलने लगे। फिर घास के मैदान पीले गुलाबी और नीले रंग के फूलों से भर गये। वसन्त की सारी चिड़ियॉ वहॉ वापस आ गयी थीं।

बरफ की लड़की धीरे धीरे और ज़्यादा शान्त और दुखी होती गयी। वह सूरज से छिप जाती। वह किसी ठंडी जगह को ढूँढती रहती। जब बारिश होती तो वह अपने हाथ उसके नीचे फैला देती।

एक बार काले बादलों का एक टुकड़ा फट गया और उसमें से बटन जितने बड़े बड़े ओले पड़ने लगे। उन ओलों को देख कर तो वह इतनी खुश हुई कि वह उनको पकड़ने के लिये ऐसे दौड़ी जैसे वे कोई कीमती जवाहरात हों।

पर जैसे ही सूरज ने उनको पिघला दिया तो वह ऐसे रो पड़ी जैसे किसी भाई के मरने पर उसकी अपनी बहिन रोती है।

[8] Lark is a small bird with yellow breast

एक दिन जब गरमियॉ आने वाली थीं तो गॉव की कुछ लड़कियों के एक झुंड ने बरफ की लड़की को खेलने के लिये बाहर बुलाया।

उन्होंने कहा — "आओ न हमारे साथ, हम लोग गरमियॉ मनाने के लिये बाहर जा रहे हैं।" पर बरफ की लड़की तो उनसे बच कर साये में जा कर सिकुड़ कर बैठ गयी।

यह देख कर उसकी बुढ़िया मॉ ने कहा — "जाओ न बेटी, अपनी दोस्तों के साथ खेल आओ। तुमको हम बूढ़ों के साथ घर में नहीं बैठना चहिये। जाओ और धूप का आनन्द लो।"

उन लड़कियों में से एक लड़की ने जिसका नाम अन्ना[9] था बरफ की लड़की का हाथ पकड़ा और उसको मैदान की तरफ खींच ले गयी।

उन्होंने वहॉ साथ साथ फूल इकट्ठे किये, उनकी माला बना कर अपने बालों में गूँधे। फिर उन्होंने गाने गाये और जंगल के रास्तों के बराबर बराबर कूदती फॉदती रहीं।

उस दिन सारा गॉव ज़िन्दादिल हो रहा था। खुशियॉ मना रहा था। लड़के लड़कियॉ सब एक दूसरे के साथ खेल रहे थे।

पर केवल बरफ की लड़की दुखी थी। वह अकेली घूम रही थी। उसका सिर नीचे लटका हुआ था। उसके जमे हुए होठों पर कोई मुस्कुराहट नहीं थी।

[9] Anna – name of one of the village girls

अचानक उसने बॉसुरी पर एक संगीत सुना तो उसने इधर उधर देखा। उसने देखा कि एक चरवाहा लड़का उसके सामने खड़ा है और उसको नाच के लिये बुला रहा है।

पहले तो उसने मना कर दिया और हिचकते हुए दूसरी लड़कियों के पीछे छिप गयी पर वह लड़का उसको बार बार बुलाता रहा।

चरवाहा लड़का बोला — "आओ प्रिय बरफ की लड़की आओ, मेरे साथ नाचो। मैं अपनी बॉसुरी केवल तुम्हारे लिये ही बजाऊँगा और इस तरह मैं तुम्हारे होठों पर मुस्कुराहट ले कर आऊँगा।"

इस चरवाहे लड़के का नाम लैल[10] था। उसको इस बरफ की लड़की से प्यार हो गया था। उसने उस लड़की का हाथ अपने हाथ में ले लिया।

दूसरी लड़कियों ने उसकी तरफ आश्चर्य से देखा क्योंकि वह तो उस चरवाहे लड़के के साथ गोल गोल नाच रही थी और उसके पीले गालों पर गुलाबी चमक आ गयी थी।

उस दिन के बाद से लैल उसकी खिड़की के नीचे अक्सर ही बॉसुरी बजाया करता था। वह उसको बातें करने के लिये खेतों और मैदानों में बुला लेता।

[10] Lel – the name of the shepherd boy

वह नीली ऑखों वाली लड़की भी खुशी से अपने दोस्त के साथ दौड़ी चली जाती। वह उसके साथ घूमती और फूलों के हार बनाती। फिर उनसे अपने आपको सजाती।

लैल भी उसको बहुत प्यार करता था पर उसने कभी यह महसूस नहीं किया कि वह लड़की भी अपने दिल में उसको प्यार करती थी या नहीं। उसकी दोस्ती उस लड़के को एक बच्चे की दोस्ती जैसी भोली भाली दोस्ती लगती थी।

एक दिन लैल जंगल में अकेला ही टहल रहा था कि उसने वहॉ गहरे रंग की ऑखों वाली अन्ना को देखा। अन्ना जब देखती कि लैल उस बरफ की लड़की को तो बहुत प्यार करता था और उससे ऑखें चुरा लेता था तो उसको बहुत जलन होती थी

पर जब आज अन्ना ने देखा कि लैल अकेला ही टहल रहा है तो उसने सोचा कि उसको उसका ध्यान अपनी तरफ खींचने की एक बार फिर कोशिश करनी चाहिये।

वह उसके पास पहुॅची और बड़े मीठे शब्दों में बोली — "आज मैं तुमको यहॉ अकेले घूमते देख कर कितनी खुश हूॅ लैल। मेरे दिल में तुम्हारे लिये बहुत प्यार उमड़ रहा है। मुझे अपनी ऑखें और गाल चूमने दो। मैं तुम्हारा दिल अपने प्यार से भर दूॅगी।" कह कर उसने लैल को गले से लगा लिया।

उस नौजवान चरवाहे का दिल भी यह सुन कर प्यार से भर गया। पर तभी बरफ की लड़की पेड़ों के बीच में से निकली और

अन्ना और लैल के सामने आ खड़ी हुई। वह कुछ समझी नहीं कि वहाँ क्या हो रहा था सो वह वहीं रुक गयी।

तुरन्त ही लैल अन्ना से अलग हो गया और बरफ की लड़की को समझाने के लिये दौड़ा। वह उससे बड़ी नरमी से बोला — "देखो बरफ की लड़की, अन्ना का दिल मेरे दिल जैसा बहुत प्यारा है पर तुम्हारा दिल बहुत ठंडा और खाली है। तुम उसकी तरह से प्यार क्यों नहीं कर सकतीं?"

यह सुन कर बरफ की लड़की के गालों पर आँसू बहने लगे। वह जंगल की तरफ मुड़ी और उधर भाग गयी। वह जब तक भागती रही जब तक कि वह एक गहरी झील के पास नहीं आ गयी जिसमें गुलाबी और सफेद लिली खिली हुई थी।

उस झील के चारों तरफ फूलों वाली झाड़ियाँ और पेड़ थे जिनकी शाखाऐं झील के चमकते हुए पानी की तरफ झुकी हुई थीं।

उसके किनारे पर खड़े हो कर वह सिसकते हुए बोली — "ओ मेरी माँ, इन दुख भरे आँसुओं से तुम्हारी यह बेटी तुमसे कहती है कि तुम मुझे प्यार करना सिखा दो। मुझे एक इन्सान का दिल दे दो माँ, मैं तुमसे भीख माँगती हूँ।"

यह सुन कर झील में से सुन्दर वसन्त निकली और अपनी सिसकती हुई बच्ची की तरफ प्यार से देख कर बोली — "मैं तुमको केवल एक घंटा दे सकती हूँ क्योंकि कल जब सुबह होगी तो यारीलो सूरज देवता अपना गरमी का मौसम शुरू कर देंगे और फिर

मुझे यहाँ से एक साल के लिये चले जाना पड़ेगा। तुम्हारी क्या इच्छा है मेरी बच्ची बोलो?"

बरफ की लड़की के मुँह से बस एक शब्द निकला "प्यार"।"

काँपते हुए दिल से बरफ की लड़की आगे बोली — "मेरे आस पास के सब लोग प्यार करते हैं माँ। सब खुश हैं और सन्तुष्ट हैं। केवल मैं ही हूँ जिसमें प्यार नहीं है।

न तो मैं किसी को प्यार करती हूँ और न ही मैं किसी को प्यार करने के काबिल हूँ। माँ मैं प्यार करना चाहती हूँ पर मुझे मालूम नहीं कि मैं किसी को कैसे प्यार करूँ?"

उसकी माँ दुखी हो कर बोली — "बेटी, क्या तुम अपने पिता की बात भूल गयीं? तुम अच्छी तरह जानती हो कि प्यार का क्या मतलब है। उसका मतलब है तुम्हारी मौत।"

बरफ की लड़की बोली — "तो इससे तो अच्छा यह है कि मैं जल्दी से जल्दी मर जाऊँ। प्यार का एक पल, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो मुझे इस बिना प्यार वाली ज़िन्दगी से ज़्यादा प्यारा है माँ।"

सुन्दर वसन्त एक आह भर कर बोली — "ऐसा ही हो मेरी बच्ची। प्यार का स्रोत मेरे सिर पर लगे इस लिली के ताज में है तुम इसको ले लो और अपने सिर पर पहन लो।"

बरफ की लड़की ने खुशी से मॉ के सिर पर से वह लिली के फूलों वाला ताज ले लिया और अपने सिर पर रख लिया।

जैसे ही उसने वह ताज अपने सिर पर रखा वह चिल्लायी — "मॉ मेरे दिल में यह कैसी अजीब सी हलचल मच रही है। दुनियॉ की सुन्दरता देखने के लिये मेरी तो ऑखें खुल रही हैं। मैं चिड़ियों का गाना सुन पा रही हूॅ। मॉ मेरे दिल में वसन्त की खुशी भरी जा रही है।"

उसकी मॉ बोली — "मेरी प्यारी बच्ची वसन्त की खुशबू ने तुम्हारी आत्मा को भर दिया है। तुमको अपने दिल में प्यार की पूरी ताकत का बहुत जल्दी ही पता चल जायेगा।

पर मेरी बच्ची, एक बात का ध्यान रखना। तुम अपने प्यार को यारीलो की तेज़ नजर से बचा कर रखना। उसकी गुलाबी किरणों की तारीफ करने के लिये सुबह को बाहर मत खड़ी रहना। जल्दी से पत्तों के साये में या जंगल की ठंडक में दौड़ जाना। अच्छा विदा मेरी बच्ची।"

इन आखिरी शब्दों के साथ ही सुन्दर वसन्त झील में डूबती चली गयी। बरफ की लड़की जंगल के रास्तों पर कूदती फॉदती चल दी।

रास्ते में जब उसने बॉसुरी की आवाज सुनी तो उसका दिल तो बहुत ज़ोर से धड़कने लगा। वह उस आवाज की तरफ दौड़ पड़ी।

जल्दी ही वह एक खुले मैदान में आ पहुँची जहाँ सूरज चमक रहा था। वहाँ फ़र के पेड़ के पास एक लकड़ी का लट्ठा पड़ा हुआ था और उस लट्ठे के ऊपर लैल बैठा हुआ बहुत दुखी मन से अपनी बाँसुरी बजा रहा था।

वह जिस लड़की को प्यार करता था उसको देखते ही वह कूदा और खुशी से चिल्लाया — "ओ बरफ की लड़की, मैं तुमको सारा दिन ढूँढता रहा। मुझे अपने उन जल्दी में कहे गये शब्दों के लिये माफ कर दो। तुम तो मुझसे बहुत गुस्सा होगी न?"

बरफ की लड़की धीरे से बोली — "नहीं लैल। वह गुस्सा नहीं था जो मेरे दिल में भरा हुआ था, वह तो प्यार था। अब मुझे पता चला कि दुनियाँ में कहीं प्यार तो है ही नहीं।"

लैल बोला — "ओ बरफ की लड़की तो तुम्हारे भी दिल है? तुम भी मुझसे प्यार करती हो?"

बरफ की लड़की बोली — "हाँ मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ। मैं तुमसे प्यार करना कभी नहीं छोड़ूँगी लैल, कभी नहीं।"

उसी समय उसने आसमान की तरफ देखा तो बोली — "हमको जल्दी करनी चाहिये। यारीलो की किरणें मुझे बहुत डरा रही हैं। मुझे उनसे बचा लो लैल, क्योंकि उनसे मुझे बहुत तकलीफ पहुँचती है।"

लैल कुछ गुस्सा सा हो गया क्योंकि वह यह समझ ही नहीं पा रहा था कि वह बरफ की लड़की क्या कह रही थी।

लैल बोला — "प्रिय बरफ की लड़की, हम अपना प्यार दिन की रोशनी से हमेशा के लिये छिपा कर नहीं रख सकते।"

जब वह यह सब बोल रहा था तो सूरज की चमकती हुई किरणें आसमान में और ऊपर चढ़ती जा रही थीं। सुबह का धुँधलका गायब होता जा रहा था और जमीन पर पड़े बरफ के आखिरी टुकड़े भी पिघलते जा रहे थे।

कि तभी सूरज की एक किरण बरफ की लड़की पर पड़ी। दर्द से चिल्लाते हुए वह बरफ की लड़की लैल से दूर हट गयी और फुसफुसाते हुए लैल से प्रार्थना की कि वह उसके लिये अपनी बाँसुरी आखिरी बार एक बार फिर से बजा दे।

लैल ने अपने काँपते होठों पर बाँसुरी रखी और उसे बजाना शुरू किया। जैसे ही उसने बाँसुरी बजाना शुरू किया बरफ की लड़की की आँखों से आँसू बह निकले।

उसके चेहरे का रंग उतर गया। उसके पैर नीचे से पिघलने लगे। धीरे धीरे उसका शरीर भीगी हुई जमीन में धँसता चला गया केवल उसके सिर का लिली के फूलों का ताज ही जमीन पर रखा रह गया। बस।

धीरे से एक सफेद कोहरे का बादल उठा और उठ कर साफ आसमान में जा कर गायब हो गया।

यह देख कर लैल चिल्लाया — "ओ बरफ की लड़की, मेरी प्यारी बरफ की लड़की, तुमने मुझसे सूरज से अपनी रक्षा करने के लिये कहा था पर मैंने नहीं सुना और अब मेरी ऑखों के सामने सामने तुम वसन्त की आखिरी बरफ की तरह से पिघल गयीं। मुझे माफ कर दो, ओ बरफ की लड़की मुझे माफ करदो।"

पर उसका रोना तो किसी ने सुना नहीं।

किसी ने नहीं, मतलब सिवाय एक दुखी मॉ के जो लिली से भरी झील में रहती थी और दूसरे उस बूढ़े लाल नाक वाले पाले ने जो दूर उत्तरी बरफ में रहता था।

2 पिता पाला[11]

एक बार की बात है कि एक बहुत दूर के देश में, रूस में ही कहीं किसी जगह एक सौतेली मॉ रहती थी जिसके एक सौतेली बेटी थी और एक उसकी अपनी बेटी थी।

उसको अपनी बेटी बहुत प्यारी थी। वह जो भी करती उसकी मॉ पहली होती जो उसके उस काम की तारीफ करती। उसको शाबाशी देती पर सौतेली बेटी को कोई तारीफ या शाबाशी नहीं मिलती।

हालॉकि वह बहुत अच्छी और दयालु थी फिर भी उसको सिवाय बुरे शब्दों के और कुछ नहीं मिलता। अब इसके लिये क्या किया जा सकता था।

हवा का काम है चलना पर फिर भी कभी कभी वह रुक जाती है। पर वह बुरी औरत यह नहीं जानती थी कि वह अपने बुरेपन को कैसे रोके।

एक दिन बहुत ठंडा दिन था तो उस सौतेली मॉ ने अपने पति से कहा — "ओ बूढ़े मैं चाहती हूॅ कि तुम अपनी बेटी को मेरी नजरों से दूर ले जाओ मेरे कानों से दूर ले जाओ।

[11] The Father Frost – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ftr/chap09.htm
From the Book "Folk Tales from the Russian", by Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal. 1903. 9 tales.

तुम उसे अपने लोगों में किसी गरम जगह नहीं ले जाओगे। तुम उसे किसी खुले हुए बड़े मैदान में ले जाओगे जहॉ जानतोड़ पाला पड़ता है।"

यह सुन कर लड़की का पिता बहुत दुखी हुआ। यहॉ तक कि वह रो पड़ा पर फिर भी उसने उसको स्ले[12] में बिठाया और खुले मैदान की तरफ ले चला।

उसकी इच्छा थी कि वह उसको ठंड से बचाने के लिये भेड़ की खाल ओढ़ा दे पर फिर भी वह यह नहीं कर सका क्योंकि उसकी पत्नी खिड़की से उसे देख रही थी।

सो वह अपनी प्यारी बेटी को ले कर एक बहुत खुले हुए मैदान में चला गया। जंगल के पास उसको अकेला छोड़ा और तुरन्त ही वहॉ से जल्दी जल्दी चला आया। वह एक बहुत अच्छा आदमी था वह अपनी बेटी की मौत नहीं देख सकता था।

वह बेचारी प्यारी सी बेटी वहॉ अकेली बिल्कुल अकेली खड़ी रह गयी। उसका दिल टूट गया था वह बहुत डरी हुई थी। उसने जल्दी जल्दी जितनी भी प्रार्थनाऐं उसको याद थीं वे सब बोलीं।

पिता पाला[13] जो वहॉ का अकेला राजा था जो फ़र में लिपटा हुआ था जिसकी बहुत लम्बी सफेद दाढ़ी थी जिसके सिर पर

---

[12] Sleigh is wheelless carriage drawn by special dogs or deer espaecially in icy regions where other normal vehicles cannot run – see its picture above.

[13] Translated for the words "Father Frost"

चमकीला सफेद ताज था वह उसके पास और और पास आया। उसने अपने सुन्दर छोटे मेहमान की तरफ देखा और पूछा — "क्या तू मुझे जानती है? मैं लाल नाक वाला पाला।"

लड़की बड़ी नम्रता से बोली — "आपका स्वागत है पिता पाले। मुझे लगता है कि मेरे भगवान ने आपको मेरी पापपूर्ण आत्मा के लिये भेजा है।"

पाले ने फिर पूछा — "मेरी प्यारे बच्ची क्या तू यहाँ ठीक से है?" वह उसके प्यारी सी सूरत और कोमल स्वभाव से बहुत खुश था।

लड़की ठंड से ठीक से साँस भी नहीं ले पा रही थी फिर भी वह बोली — "हाँ पिता पाले मैं बिल्कुल ठीक हूँ।"

खुश और शानदार पाला पेड़ों की शाखाओं में कड़कता रहा और लड़की ठंडी होने के बावजूद यह कहती रही "मैं बिल्कुल ठीक हूँ मेरे प्रिय पिता पाले मैं बिल्कुल ठीक हूँ।"

पर पिता पाला आदमियों की कमजोरियों को जानता था। वह जानता था कि केवल कुछ आदमी ही ऐसे होते हैं जो अच्छे और दयालु होते हैं पर वह किसी ऐसे आदमी को नहीं जानता था जो बहुत देर तक ठंड सह सकता हो या पाले की ताकत का मुकाबला कर सकता हो।

छोटी लड़की का दया भाव और उसकी नम्रता उसको इतनी प्रभावित कर गयी कि उसने सोचा कि वह उससे दूसरे लोगों की

तुलना में कुछ अलग तरीके से बरताव करेगा सो उसने उसको एक बड़ा बक्सा भर के बहुत सारी बहुत सुन्दर सुन्दर चीज़ें दीं।

उसने उसको एक बहुत ही कीमती शूबा[14] दिया जिसके नीचे फ़र लगा हुआ था। उसने उसको रेशम की रजाइयॉ दीं जो पंखों की तरह से मुलायम थीं और मॉ की गोद की तरह से गरम थीं। उसने उसको और भी बहुत सारे सुन्दर और कीमती कपड़े दिये।

इन सब चीज़ों को पा कर वह तो क्या ही अमीर बच्ची बन गयी। और इस सबके अलावा बूढ़े पाले ने उसको नीले रंग का एक सैराफान[15] भी दिया जिस पर चॉदी और मोतियों का काम हो रखा था।

जब उस लड़की ने उसको पहना तो वह तो इतनी सुन्दर लड़की हो गयी कि सूरज भी उसको देख कर मुस्कुरा दिया।

अब हम उसकी सौतेली मॉ के पास चलते हैं। उसकी सौतेली मॉ रसोईघर में काम कर रही थी। वह घर के लिये पैनकेक बनाने में लगी हुई थी।

रूस में यह रिवाज है कि किसी की मौत के बाद ये पैनकेक पुजारी जी को खिलाये जाते हैं।

[14] Schouba is a large Russian type of fur-lined coat

[15] Sarafan is the Russian national costume for women

पत्नी ने पति से कहा — "अब ओ बूढ़े तुम उस बड़े मैदान में जाओ और अपनी बेटी की लाश ले कर आओ। हम उसको दफ़ना देंगे।"

बूढ़ा यह सुन कर चला गया और उनका छोटा कुत्ता जो वहीं एक कोने में बैठा था अपनी पूँछ हिला कर बोला — "भौं भौं भौं भौं। बूढ़े की बेटी तो घर वापस आ रही है। वह इतनी खुश है और इतनी सुन्दर हो गयी है जितनी पहले कभी नहीं थी। और नीच मॉ की बेटी उतनी ही बुरी है जितनी कि वह पहले थी।"

यह सुन कर सौतेली मॉ ने उसको मारा और चिल्लायी — "चुप रह ओ बेवकूफ जंगली जानवर चुप रह। ले यह पैनकेक ले और इसे खा और कह "बुढ़िया की बेटी की शादी बहुत जल्दी होगी और बूढ़े की बेटी जल्दी ही दफ़नायी जायेगी।" कह कर उसने एक पैनकेक उसकी तरफ फेंक दिया।

अब उस कुत्ते ने कुछ नया कहना शुरू किया — "भौं भौं भौं भौं। बूढ़े की बेटी अमीर और खुश हो कर जल्दी ही घर आ रही है जैसी वह पहले कभी नहीं थी। और बुढ़िया की बेटी अभी भी घरेलू और बुरी है जैसी कि वह पहले थी।"

बुढ़िया को कुत्ते पर बहुत ज़ोर से गुस्सा आ गया उसने फिर से उसको पैनकेक दिया और मारा पर पैनकेक देने और मारने के बावजूद वह कुत्ता वही शब्द बार बार दोहराता रहा। न तो वह चुप हुआ और न अपने कहे शब्द ही बदले।

तभी किसी ने घर का फाटक खोला। पत्नी को किसी की हॅसी की और बात करने की अवाज सुनायी पड़ी तो बुढ़िया ने बाहर झॉक कर देखा तो आश्चर्य में डूबी वहीं की वहीं बैठ गयी।

उसकी सौतेली बेटी तो राजकुमारी की तरह बहुत सुन्दर कपड़ों में सजी धजी चली आ रही थी। और उसका बूढ़ा पिता बड़ी मुश्किल से उसका वह भारी बक्सा उठा कर ला पा रहा था जिसमें उसकी बेटी के पहनने के कपड़े रखे थे।

सौतेली मॉ तो यह देख कर एक तरफ तो दुखी हो गयी कि उसकी सौतेली बेटी इतनी सरदी में भी इतनी देर तक रहने के बाद भी ज़िन्दा ही घर वापस चली आ रही थी। पर दूसरी तरफ उसको सजी धजी देख कर जल उठी कि यह सब उसकी अपनी बेटी की किस्मत में भी तो हो सकता था।

सो उसने बड़ी बेचैनी से कहा — "ओ बूढ़े अपने सबसे अच्छे घोड़ों को अपनी सबसे अच्छी स्ले में जोतो और मेरी बेटी को भी वहीं उसी जगह ले जाओ बड़े बड़े खुले मैदान में जहॉ तुम अपनी बेटी को छोड़ कर आये थे।"

बूढ़े ने एक बार फिर अपनी पत्नी का कहना माना जैसे कि वह पहले मानता था और अपनी सौतेली बेटी को भी वहीं ले गया जहॉ वह अपनी बेटी को छोड़ कर आया था और उसको वहीं छोड़ कर घर आ गया।

बूढ़ा पाला अभी भी वहीं था। उसने अपने नये मेहमान को देखा।

लाल नाक वाले पाले ने उससे पूछा — "ओ सुन्दर लड़की क्या तुम ठीक हो?"

लड़की ने बड़े गुस्से से जवाब दिया — "मुझे अकेला छोड़ दो। क्या तुम्हें दिखायी नहीं दे रहा कि मेरे हाथ पॉव ठंड से अकड़े जा रहे हैं?"

खुश और शानदार पाला पेड़ों की शाखाओं में कड़कता रहा और उस लड़की से कुछ सवाल पूछता रहा पर उससे उसे कोई नम्र जवाब नहीं मिला। इससे वह गुस्सा हो गया और उसने उसको ठंड में जमा कर मार दिया।

इधर कुछ देर बाद सौतेली मॉ ने अपने पति से कहा — "ओ बूढ़े जाओ और जा कर मेरी बेटी को ले कर आओ। उसके लिये सबसे अच्छे घोड़े ले कर जाना। स्ले चलाते समय खयाल रखना कि स्ले कहीं उलट पलट न हो जाये। और वह बक्सा जो वह साथ ले कर आयेगी उसका भी खयाल रखना।"

और कोने में बैठा कुत्ता बोला — "भौं भौं भौं भौं। बूढ़े की बेटी की शादी जल्दी होगी। और बुढ़िया की बेटी जल्दी ही दफ़नायी जायेगी।"

बुढ़िया यह सुन कर गुस्से में बोली — "झूठ मत बोल। ले यह केक ले और खा और बोल कि "बुढ़िया की बेटी चॉदी और सोने लिपटी आयेगी।"

तभी घर का फाटक खुला।

बुढ़िया घर से बाहर भागी गयी और अपनी बेटी की जमी हुई अकड़ी हुई लाश के ठंडे होठों को चूमा। वह उसको देख देख कर बहुत देर तक रोती रही पर अब उसकी सहायता कौन करता।

आखिर उसने यह भी समझ लिया कि उसकी और उसकी बेटी की नीचता ओर जलन ने ही उसकी बेटी की जान ली है। पर अब क्या हो सकता था।

3 मार्च और चरवाहा[16]

मौसम की यह दूसरी लोक कथा हमने यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि एक चरवाहा था जिसके पास समुद्र के किनारे पर रेत के जितने कण होते हैं उससे भी ज़्यादा भेड़ और मेमने थे।

इतने सारे जानवरों को देख कर उसको हमेशा यही डर लगा रहता था कि कहीं उसका कोई जानवर मर न जाये।

जाड़े का मौसम लम्बा होता था और वह चरवाहा हमेशा ही साल के महीनों से प्रार्थना किया करता था — "ओ दिसम्बर, मेरे ऊपर मेहरबान रहना। ओ जनवरी, मेरे किसी जानवर को जमा कर नहीं मारना। ओ फरवरी, तुम मेरे लिये अच्छे से रहना। मैं तुम्हारी हमेशा पूजा करूँगा।"

महीने उस चरवाहे की प्रार्थना सुनने के लिये रुक जाते और वह चरवाहा उनकी जो भी छोटी सी प्रार्थना करता वे उन प्रार्थनाओं की बहुत तारीफ करते और उसकी प्रार्थनाओं को स्वीकार कर लेते।

[16] March and the Shepherd (Story No 198) – a folktale from Italy from its Corsica area. Adapted from the book "Italian Folktale", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

फिर वे न तो बारिश करते, न ओले बरसाते, न किसी जानवर को किसी तरह बीमार करते और इस तरह उसके वे भेड़ और मेमने सारे जाड़े बिना किसी परेशानी के चरते रहते।

और फिर आता मार्च का महीना। साल का सबसे अच्छा महीना। उस महीने में सारे काम आराम से होते रहते। अब मार्च के महीने के आखिरी दिन आ पहुँचे थे।

सो चरवाहा सोच रहा था कि अब उसकी चिन्ता खत्म हो गयी थी क्योंकि उसके सब जानवर अब तक ज़िन्दा थे।

अब वे अप्रैल के किनारे पर खड़े थे। अप्रैल का महीना जो वसन्त की शुरूआत थी और अब तक उस चरवाहे के सारे जानवर सुरक्षित थे।

इसलिये अब चरवाहे ने महीनों की प्रार्थना करना बन्द कर दिया और नाचना गाना शुरू कर दिया — "ओ छोटे मार्च, ओ मार्च मेरे बेटे। जो मेरे जानवरों के लिये एक डर था वह तो अब चला गया।

अब तुमसे कौन डरता है? क्या मेमने? वे डरते होंगे पर कम से कम मैं तो नहीं डरता। आखिर वसन्त आ गया। अब तुम मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते। अब तुम जहाँ चाहे जा सकते हो।"

उस कृतघ्न चरवाहे की यह अपमान भरी बात सुन कर मार्च महीने का खून खौल गया। उसने अपने बरसाती कोट का बटन बन्द किया और अपने भाई अप्रैल के घर की तरफ दौड़ गया और उससे जा कर बोला —

अप्रैल अप्रैल मेरा एक काम कर दो, अपने भाई को तीन दिन उधार दे दो
केवल इस चरवाहे को सजा देने के लिये जो पागलों जैसी बात करता है

अप्रैल ने जो अपने भाई को बहुत प्यार करता था उसकी प्रार्थना सुन कर उसको अपने तीन दिन उधार दे दिये। अपने भाई से तीन दिन उधार ले कर मार्च ने सबसे पहला काम तो यह किया कि सारी दुनियॉ में बहुत तेज़ हवाऐं चला दीं। दुनियॉ भर के तूफान उठा दिये।

वे सब हवाऐं और तूफान उस चरवाहे की भेड़ों और मेमनों को परेशान करने लगे। पहले दिन चरवाहे की सारी भेड़ें बीमार पड़ गये। दूसरे दिन उसके मेमनों की बारी थी और तीसरे दिन तो उसके झुंड में से एक भी जानवर ज़िन्दा नहीं बचा।

बस अब चरवाहे के पास उसकी ऑखें थीं जो बराबर ऑसू बहाये जा रही थीं।

4 बरफ का आदमी और वसन्त का दूत[17]

मौसम की यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका के आदिवासियों की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार बरफ का आदमी एक जमी हुई नदी के किनारे एक तम्बू में बैठा हुआ था। उसकी आग बुझ गयी थी। वह बहुत बूढ़ा हो चला था और कुछ उदास भी था। उसके बाल सफेद और बहुत लम्बे थे। वहॉ रोज ही जाड़े के तेज़ तूफानों की आवाज सुनायी देती थी और कुछ भी नहीं।

एक दिन जब बरफ के आदमी की आग का आखिरी अंगारा भी बुझने वाला था तो उसने देखा कि एक जवान लड़का उसके तम्बू की ओर बढ़ा चला आ रहा है।

लड़के के गाल लाल थे, ऑखें खुशी से चमक रही थीं और वह मुस्कुरा रहा था। वह हल्के हल्के कदमों से तेज़ तेज़ चल रहा था और उसके सिर के चारों ओर मुलायम घास की एक माला बॅधी हुई थी। उसके हाथ में ताज़े फूलों का एक गुच्छा था।

बरफ के आदमी के पास आ कर उस लड़के ने उसको नमस्ते की तो बरफ के आदमी ने कहा — "आओ बेटा, अन्दर आओ।

[17] Iceman and the Messenger of Spring – a folktale from Cherokee Tribe, America, North America

मुझे तुमको देख कर बहुत खुशी हुई पर तुम यह तो बताओ कि तुम यहाँ क्यों आये हो?"

लड़का बोला — "मैं वसन्त का दूत हूँ।"

इस पर बरफ का आदमी बोला — "ओह, तब मैं तुम्हें अपनी ताकत के बारे में बताता हूँ कि मैं क्या क्या कर सकता हूँ फिर तुम मुझे बताना कि तुम क्या क्या कर सकते हो।"

यह कह कर बूढ़े बरफ के आदमी ने अपनी दवाओं की पोटली में से एक पाइप निकाला और उसको खुशबूदार पत्तियों से भर दिया। फिर उसको उसने अपने आखिरी कोयले से जलाया और उसका धुँआ चारों दिशाओं में उड़ा कर वह पाइप उस लड़के को दे दिया।

फिर वह बोला — "जब मैं अपनी साँस छोड़ता हूँ तो नदियों में बहता पानी रुक जाता है, जम जाता है और पारदर्शक भी हो जाता है। जब मैं अपने लम्बे बालों को झटकता हूँ तो सारी धरती बरफ से ढक जाती है।

मेरे कहने पर पेड़ों की पत्तियाँ कत्थई पड़ जाती हैं और पेड़ों से गिर जाती हैं और मेरी साँस का एक झोंका उनको उड़ा कर बहुत दूर ले जाता है। पानी वाली चिड़िया झीलों से उठ कर उड़ कर दूर देश चली जाती हैं।

मेरी तो सॉस से भी जानवर डर जाते हैं। वे धरती में जा कर छिप जाते हैं और उनके ऊपर की धरती सख्त हो जाती है।"

यह सब सुन कर वह लड़का मुस्कुराया और बोला — "मैं जब अपने बाल झटकता हूँ तो धीमी धीमी बारिश होने लगती है। नये नये पौधे धरती से बाहर झॉकने लगते हैं। मेरी गरम सॉसों से नदियों का जमा हुआ पानी पिघल जाता है।

अपनी आवाज से मैं चिड़ियों को वापस बुला सकता हूँ। मैं जिस जिस जंगल से हो कर गुजर जाता हूँ उन उनको मैं उन चिड़ियों के मीठे गीतों से भर देता हूँ।"

सूरज आसमान में काफी ऊपर उठ आया था और उसकी हल्की गरमी धरती पर चारों ओर फैलने लगी थी।

बरफ का आदमी चुपचाप बैठा लड़के की ताकत को सुन रहा था कि इतने में उसने एक रोबिन और एक ब्लू बर्ड को अपने तम्बू के ऊपर चहचहाते सुना।

बाहर नदियों के पानी की कलकल की आवाज भी उसको सुनायी पड़ी। चारों तरफ खुशबूदार फूल खिल गये जिससे चारों तरफ उनकी खुशबू फैल गयी।

लड़के ने देखा कि बूढ़े की ऑखों में ऑसू थे। जैसे जैसे सूरज की गरमी बढ़ती गयी वह बूढ़ा छोटा और छोटा और बहुत छोटा होता गया और धीरे धीरे सारा का सारा पिघल गया।

उसकी आग भी नहीं रही। उसकी जगह पर गुलाबी धारी वाला एक फूल खिला जिसका नाम लोगों ने रखा स्प्रिंग ब्यूटी, क्योंकि वही सबसे पहला पौधा था जिससे जाड़े के जाने का पता चलता था।

5 बरफ के आदमी की वापसी[18]

मौसम की यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका के आदिवासियों की चैरोकी जाति की लोक कथाओं से ली गयी है। पिछली दो लोक कथाओं में बरफ का मौसम चला गया था और वसन्त का मौसम आ गया था।

इस लोक कथा में अब वसन्त का मौसम चला गया है और अब पतझड़ के मौसम के बाद बरफ का मौसम फिर से आने वाला है।

एक बार की बात है कि पतझड़ के मौसम में एक बहुत सारे कोहरे वाले पहाड़ पर पड़ी सूखी पत्तियों ने आग पकड़ ली और वे धू धू करके जल उठीं। आग फैलती गयी और फैलती गयी। कोई उस आग को काबू में नहीं कर सका।

उस भयंकर आग से बहुत सारे पेड़ जल गये, फिर वह उनकी जड़ों में चली गयी और वहॉ भी उसने बहुत सारे गड्ढे कर दिये। आग और गहरे में घुस गयी और वहॉ धरती की हर चीज़ को जलाती गयी। धीरे धीरे वहॉ एक बहुत बड़ा गड्ढा बन गया।

जब यह आग इतनी अधिक बढ़ गयी तो वहॉ के रहने वाले लोग परेशान हो गये। उन्होंने इस बीच में आग बुझाने की बहुत कोशिश की परन्तु नाकामयाब रहे।

[18] Return of the Iceman – a folktale from Cherokee Tribe, America, North America

तब गॉव का सरदार बोला कि केवल एक ही आदमी उस आग को बुझा सकता था और वह था बरफ का आदमी। वह बरफ का आदमी बहुत दूर कहीं उत्तर में रहता था।

सरदार ने फिर एक मीटिंग बुलायी और इकट्ठा हुए आदमियों में से दो आदमियों को चुना जो बरफ के आदमी की खोज में जा सकें और उसको वहॉ ला सकें। सो वे दो आदमी उत्तर की तरफ गये। काफी लम्बा सफर करने के बाद उन लोगों को वह बरफ का आदमी मिल गया।

बरफ का आदमी बहुत बूढ़ा था। उसके धरती तक लम्बे बाल दो लम्बी चोटियों में बॅधे लटके हुए थे। उन दोनों आदमियों ने बरफ के आदमी को अपने आने की वजह बतायी और कहा कि वे आग बुझाने में उसकी मदद चाहते हैं।

बरफ का आदमी बोला — "हॉ, मैं आग बुझाने में तुम्हारी मदद कर सकता हूँ।" कह कर उसने अपने बाल खोल डाले। फिर उनमें से उसने अपने बालों की एक लट ली और उसको दूसरे हाथ की हथेली पर मारा। इससे बहुत ठंडी हवा चलने लगी।

जब उसने उसी लट को हथेली पर दोबारा मारा तो धीमी धीमी बारिश होने लगी। और जब तीसरी बार उसने उस लट को हथेली पर मारा तो बारिश बहुत तेज़ हो गयी।

और जब चौथी बार उसने अपनी लट को हथेली पर मारा तो बहुत ज़ोर से बरफ गिरने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे यह सब उसकी उस लट में से निकल रहा हो।

वह बरफ का आदमी उन दोनों आदमियों से बोला — "अब तुम लोग घर वापस जाओ मैं भी कुछ दिनों में वहॉ आता हूँ।"

वे दोनों आदमी उसका यह सन्देश ले कर तुरन्त अपने गॉव वापस आ गये। वहॉ लोग अभी भी जलते हुए गड्ढे के चारों तरफ मजबूर से खड़े हुए थे।

कुछ ही दिनों में उत्तरी ठंडी हवा बहने लगी। लोगों ने जान लिया कि वह हवा बरफ के आदमी की भेजी हुई थी। परन्तु उस हवा से तो आग और भी तेज़ हो गयी थी।

इतने में धीमी धीमी बारिश शुरू हो गयी लेकिन वहॉ आग इतनी तेज़ थी कि उस आग पर उस बारिश का कोई असर ही नहीं हो रहा था।

फिर वह धीमी बारिश तेज़ बारिश में बदल गयी जिसने आग तो कम की परन्तु उस बारिश के आग पर पड़ने से जो धुऑ उठा उससे बादल बन गये।

सारे लोग बारिश से बचने के लिये अपने अपने घर की तरफ दौड़े। इतने में ही बहुत ज़ोर का तूफान आ गया और उसके साथ

आयी बरफ जिसने सारी आग को सफेद बरफ से ढक दिया। ऐसा लग रहा था जैसे आग के ऊपर किसी ने सफ़ेद बरफ का कम्बल डाल दिया हो।

काफी दिनों के बाद जब यह तूफान रुका और लोग अपने अपने घरों से बाहर निकले तो उन्होंने देखा कि वह जलता हुआ गड्ढा अब एक बड़ी झील बन गया है।

आज भी उस बहुत सारे कोहरे वाले पहाड़ के पास रहने वाले लोगों का कहना है कि वे अभी भी कभी कभी झील में पानी के नीचे अंगारे बुझने की आवाजें सुनते हैं।

6 वसन्त राजकुमारी[19]

मौसम की यह लोक कथा दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप के ब्राज़ील देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार चॉद बड़े साइज़ के आदमी[20] ने एक बहुत सुन्दर बड़े साइज़ की राजकुमारी जो बड़ी नदी[21] में रहती थी से प्यार किया और उसका प्यार जीत लिया।

उसने जहॉ वह बड़ी नदी समुद्र में जा कर मिलती थी वहॉ उसके लिये एक बहुत बड़ा महल बनवाया जो सीपी[22] का बना हुआ था। उसमें बहुत सारी खुदायी हो रही थी और उसमें सोना चॉदी और कीमती जवाहरात जड़े हुए थे।

इससे पहले कभी किसी बड़े साइज़ के आदमी या स्त्री के पास इतना बढ़िया शानदार घर नहीं था।

समय आने पर चॉद बड़े साइज़ के आदमी और बड़ी नदी बड़े साइज़ की लड़की के जब बेटी हुई तो उसको सब बड़े साइज़ के लोगों में सब वसन्तों की बड़े साइज़ की राजकुमारी घोषित कर दिया गया। अब वह सब झीलों और नदियों की राजकुमारी हो गयी थी।

---

[19] The Princess of the Springs – a folktale from Brazil, South America. Taken from the Web Site : http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_23.html
Taken from the Book : "Tales of Giants From Brazil", by Elsie Spicer Eells. NY, Dodd, Mead and Company, Inc. 1918. 12 Tales. This book is given at the above Web Site.

[20] Translated for the word "Giant". Its feminine is "Giantess".

[21] Translated for the words "Great River"

[22] Translated for the words "Mother of Pearl"

उसकी ऑखों की रोशनी चॉद की किरणों जैसी थी। उसकी मुस्कान ऐसी थी जैसे चॉद की किरणें शान्त पानी पर पड़ रही हों। उसके अन्दर बड़ी नदी की ताकत जैसी ताकत थी। उसकी चाल बड़ी नदी की तेज़ चाल जैसी थी।

जैसे जैसे सुन्दर वसन्त राजकुमारी बड़ी होती गयी तो बहुत सारे लोग उसके महल की खिड़की के नीचे उसकी तारीफ करने के लिये आने लगे पर उसको उनमें से कोई अच्छा नहीं लगा।

उसको तो बस अपने महल में अपनी प्यारी मॉ के साथ अकेले रहने में ही इतना अच्छा लगता था कि उसने अपनी शादी के लिये आये किसी उम्मीदवार की तरफ ऑख उठा कर भी नहीं देखा।

शायद कभी किसी बेटी ने अपनी मॉ को इतना प्यार नहीं किया होगा जितना कि वसन्त राजकुमारी अपनी मॉ बड़ी नदी को करती थी।

और फिर एक दिन सूरज बड़े साइज़ का आदमी वसन्त राजकुमारी से शादी की इच्छा से आया। सूरज बड़े साइज़ आदमी की ताकत वसन्त राजकुमारी के लिये आने वाले दस उम्मीदवारों जितनी थी। सो उसने उसका दिल जीत लिया।

जब उसने उससे शादी के लिये पूछा और उससे अपने महल चलने के लिये पूछा तो वसन्त राजकुमारी ने अपना सिर हिलाया और बोली — "ओ सूरज बड़े साइज़ के आदमी, तुम तो बहुत ही बढ़िया और ताकतवर आदमी हो। मैं तुमको इतना प्यार करती हूॅ

जितना मैंने अपने किसी उम्मीदवार को नहीं किया जो मेरे महल की खिड़की के नीचे मेरी तारीफ करते थे।

पर मैं अपनी मॉ को भी बहुत प्यार करती हूॅ। मैं अपनी मॉ को यहॉ छोड़ कर तुम्हारे साथ नहीं जा सकती। इससे तो मेरा दिल टूट जायेगा।"

इस पर सूरज बड़े साइज़ के आदमी ने उससे बार बार अपना प्यार जताया और अपने शानदार महल का बखान किया जो उसकी नयी रानी की हैसियत से नयी खुश ज़िन्दगी की शुरूआत का नया घर होगा।

आखिर उसने सूरज बड़े साइज़ के आदमी की प्रार्थना सुन ली और घर छोड़ने का और उसके साथ हर एक साल के नौ महीने रहने का इरादा कर लिया। हर साल के तीन महीने वह अपनी मॉ बड़ी नदी, बड़े शरीर वाली स्त्री, के सीपी के बने शानदार घर में आ कर रहेगी जहॉ वह समुद्र में जा कर गिरती है और वहीं अपना समय बितायेगी।

सूरज बड़े शरीर वाले आदमी ने दुखी हो कर उसकी यह बात मान ली। शादी की दावत का इन्तजाम हुआ। यह दावत सात दिन और सात रात तक चली। उसके बाद वसन्त राजकुमारी सूरज बड़े शरीर वाले आदमी के साथ उसके घर चली गयी।

अब हर साल अपने समझौते के अनुसार वसन्त राजकुमारी तीन महीने के लिये अपनी मॉ से मिलने के लिये आती। वह उस सीपी के

महल में तीन महीने के लिये रहती जहॉ उसकी मॉ बड़ी नदी समुद्र में जा कर मिलती।

हर साल नदियॉ तीन महीने के लिये अपने रास्ते पर चलती चलती गातीं। हर साल इन तीन महीनों के लिये सूरज की धूप में झीलें खूब चमकतीं क्योंकि उसके आने से वे सब बहुत खुश होतीं।

समय आने पर वसन्त राजकुमारी के एक बेटा हुआ। जब वह अपनी मॉ से मिलने जा रही थी तो वह उसको अपने साथ ले जाना चाहती थी पर सूरज बड़े साइज़ वाले आदमी ने उसकी यह बात नहीं मानी और उसने बच्चे को घर छोड़ कर वसन्त राजकुमारी की मॉ के घर जाने के लिये सख्ती से मना कर दिया।

बेकार में ही बहुत प्रार्थना करने के बाद वसन्त राजकुमारी उदास दिल से अकेली ही अपनी यात्रा पर चल दी। उसने अपने छोटे से बच्चे को सबसे अच्छी आयाओं के पास छोड़ दिया और अपनी मॉ के घर चली गयी।

अब हुआ यह कि बड़ी नदी बड़े शरीर वाली स्त्री ने यह उम्मीद ही नहीं की थी कि उसकी बेटी उस साल उससे मिलने आयेगी।

उसने सोचा था कि सारी नदियॉ और झीलें, सीपी का महल और उसकी मॉ सब किसी तरह से बिना वसन्त राजकुमारी के ही वह समय निकाल देंगीं।

सो बड़ी नदी की वह बड़े शरीर वाली स्त्री पानी देने के लिये धरती के दूसरे हिस्सों में चली गयी थी। बीच में ही धरती के एक

बड़े शरीर वाले आदमी ने उसको बन्दी बना लिया और उसको वहॉ से भागने ही नहीं दे रहा था।

जब वसन्त राजकुमारी अपने सीपी सोने चॉदी ओर कीमती जवाहरात जड़े शानदार महल में आयी जहॉ बड़ी नदी समुद्र की तरफ जाती थी तो उसने देखा कि घर में तो कोई नहीं था। वह एक कमरे से दूसरे कमरे में चिल्लाती हुई भागती फिरी — "ओ मॉ ओ मेरी प्यारी मॉ। तुम कहॉ हो। तुम कहॉ छिपी हो।"

पर उसकी किसी पुकार का कोई जवाब नहीं था। बस उसकी अपनी आवाज ही उस सुन्दर सीपी के महल में से गूॅज कर उसके पास वापस आ रही थी। महल तो उसका सारा खाली पड़ा था।

फिर वह महल के बाहर भागी और उसने नदियों की मछलियों को पुकारा — "ओ नदी की मछलियों, क्या तुमने मेरी प्यारी मॉ को देखा है?"

उसने समुद्र के रेत को पुकार कर पूछा — "ओ समुद्र के रेत, क्या तुमने मेरी प्यारी मॉ को देखा है?"

उसने समुद्र के किनारे पड़े शंखों और सीपियों से पूछा — "क्या तुमने मेरी प्यारी मॉ को देखा है?"

पर कहीं से कोई जवाब नहीं था। किसी को पता ही नहीं था कि बड़ी नदी की बड़े शरीर वाली स्त्री को क्या हुआ था। वसन्त राजकुमारी बहत दुखी हो गयी। दुख के मारे उसका दिल रोने लगा। इस दुख से वह सारी धरती पर इधर उधर घूमने लगी।

तब वह बड़े हवा बड़े साइज़ के आदमी[23] के घर गयी। वहॉ बड़े हवा बड़े शरीर का आदमी तो अपने घर में नहीं था पर उसका बूढ़ा पिता घर में था। जब उसने वसन्त राजकुमारी की कहानी सुनी तो वह उसके लिये बहुत दुखी हुआ।

वह उसको तसल्ली देते हुए बोला — "मुझे यकीन है कि मेरा बेटा तुम्हारी मॉ को ढूँढने में तुम्हारी सहायता कर सकता है। वह अपने रोज के काम से घर वापस आता ही होगा। तुम थोड़ा इन्तजार करो।"

जब बड़े हवा बड़े शरीर का आदमी अपने काम से घर लौटा तो उसका मूड तो बहुत ही खराब हो रहा था। वह तूफान की तरह से सब कुछ तोड़ता फोड़ता चला आया।

उसके पिता ने वसन्त राजकुमारी को उसके आने वाले रास्ते से दूर एक आलमारी में छिपा रखा था। और यह उसने एक बहुत अच्छा काम किया था नहीं तो वसन्त राजकुमारी को नुकसान पहुँच सकता था।।

आ कर बड़े हवा बड़े शरीर वाला आदमी नहाया धोया खाना खाया। इसके बाद ही उसका मन कुछ ठीक हुआ। तब उसके पिता ने उससे कहा — "ओ मेरे बेटे अगर तुम्हारे पास कोई राजकुमारी तुमसे कुछ पूछने के लिये यहॉ आये तो तुम उसके साथ क्या करोगे।"

[23] Translated for the words "Great Wind Giant".

बड़े हवा बड़े शरीर वाला आदमी बोला — "क्यों? मैं उसके सवाल का जितनी अच्छी तरीके से जवाब दे सकता हूँ दूँगा। और क्या करूँगा।"

उसके पिता ने तुरन्त ही उस आलमारी का दरवाजा खोल दिया जिसमें वसन्त राजकुमारी बन्द थी। दरवाजा खोलने पर वह बाहर आ गयी। बाहर निकल कर उसने बड़े हवा बड़े शरीर वाले आदमी को अपने घुटनों पर बैठ कर नमस्ते की।

इधर उधर काफी घूमने और इतना दुखी होने के बाद भी वह उतनी ही ताजा थी जितनी ताजा वह तब थी जब वह अपनी मोती और हीरे से कढ़ी रुपहली हरी पोशाक पहन कर अपने घर से चली थी। बड़ी हवा का दिल उसकी सुन्दरता और उसके दुख को देख कर पसीज गया।

बड़ी हवा ने वसन्त राजकुमारी को उसके घुटनों पर से उठाया तो वसन्त राजकुमारी बोली — "ओ बड़ी हवा बड़े साइज़ के आदमी। मैं बड़ी नदी बड़े शरीर वाली स्त्री की बेटी हूँ।

मेरी माँ खो गयी है। मैंने उसको धरती पर हर जगह ढूँढा पर वह मुझे कहीं नहीं मिली। अब मैं आपके पास आयी हूँ। क्या आप मुझे बता सकते हैं कि वह कहाँ है और मैं उसे कैसे पा सकती हूँ।"

बड़े हवा बड़े शरीर वाले आदमी ने अपनी "सोचने वाली टोपी" पहनी और बहुत सोचने के बाद बोला — "तुम्हारी माँ जमीन पर रहने वाले

एक बड़े साइज़ के आदमी के कब्जे में है। उसने उसे कैद कर रखा है।

मुझे उस सारे मामले का पता है। मैं कल ही उस रास्ते से गुजरा था। मैं खुशी से तुम्हारे साथ चलूँगा और उसको घर वापस लाने में तुम्हारी सहायता करूँगा। हम लोग बस अभी चलते हैं।"

बड़े हवा बड़े शरीर वाले आदमी ने तुरन्त ही वसन्त राजकुमारी को अपने तेज़ घोड़ों पर बिठाया और धरती की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने धरती के बड़े साइज़ के आदमी के किले का तूफान की तेज़ी से चक्कर लगाया जिसमें धरती के बड़े साइज़ के आदमी ने बड़ी नदी बड़े साइज़ की स्त्री को कैद कर रखा था।

वसन्त राजकुमारी ने चुपचाप उसके किले की दीवारों को उस तहखाने तक काफी गहरा खोदा जहाँ उसकी माँ कैद थी। जब उसने वहाँ तक खोद लिया और उसकी माँ ने उसे देखा होगा तो तुम सोच सकते हो कि वह अपनी बेटी को देख कर कितनी खुश हुई होगी।

जब वसन्त राजकुमारी ने अपनी माँ को उस किले के तहखाने से सुरक्षित बाहर निकाल लिया तो उसने बड़ी हवा बड़े शरीर के आदमी को उसकी सहायता के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

फिर वसन्त राजकुमारी और बड़ी नदी बड़े शरीर वाली स्त्री दोनों अपने सीपी से बने और मोती और हीरों से जड़े उस सुन्दर महल में वापस आये जहाँ वह बड़ी नदी समुद्र में गिरती थी।

अचानक वसन्त राजकुमारी को याद आया कि वह तो अपने घर यानी सूरज के महल से तीन महीनों से भी ज़्यादा समय के लिये बाहर रही है।

अपने समझौते के अनुसार तो उसको केवल तीन ही महीने वहॉ से बाहर रहना था सो उसने अपनी मॉ को तुरन्त ही गुड बाई कहा और अपने पति सूरज बड़े शरीर वाले आदमी के महल की तरफ अपने बच्चे के पास चल दी।

इधर जब तीन महीने गुजर जाने के बाद भी वसन्त राजकुमारी उसके और अपने बेटे के पास वापस नहीं आयी तो सूरज बड़े शरीर वाले आदमी को पहले तो चिन्ता हो गयी पर फिर वह गुस्सा हो गया। इस बात पर वह इतना ज़्यादा गुस्सा हुआ कि उसने एक दूसरी राजकुमारी से शादी कर ली।

उस दूसरी राजकुमारी ने उन आयाओं को निकाल दिया जो वसन्त राजकुमारी के छोटे बच्चे की देखभाल कर रही थीं। बच्चे को उसने रसोईघर में रख दिया जैसे वह किसी काले दास का बच्चा हो।

जब वसन्त राजकुमारी घर लौटी तो सबसे पहला आदमी जो उसने देखा वह था उसका बेटा। वह इतना गन्दा हो रहा था कि वह उसको मुश्किल से पहचान सकी। तब उसको पता चला कि उसके पीछे क्या हुआ था।

वसन्त राजकुमारी ने तुरन्त ही अपने बेटे को उठाया उसको अपनी बॉहों में कस कर पकड़ा और उसको ले कर समुद्र की गहराइयों में चली गयी। वहॉ जा कर वह बहुत देर तक रोती रही।

वह इतना रोयी इतना रोयी कि समुद्र का पानी बढ़ कर सूरज के महल तक पहुँच गया। उसने सूरज के महल को डुबो दिया।

सूरज बड़े शरीर वाला आदमी, उसकी नयी पत्नी और उनका दरबार सब कुछ उसकी नजर के सामने से गायब हो गये। चालीस दिन तक धरती पर लोगों को सूरज दिखायी नहीं दिया।

इस वसन्त राजकुमारी का छोटा बेटा बड़ा होता रहा और अब बड़ा हो कर वह बारिश और गरज के मौसम में धरती पर राज करता है। वह धरती पर इतने ऑसू भेजता है जितने कि वसन्त राजकुमारी ने समुद्र की गहराइयों में बहाये थे।

हवाओं की लोक कथाऐं

इसके आगे कुछ लोक कथाऐं हवा के बारे में हैं। हवा चार प्रकार की होती है — "पूर्वी हवा, पश्चिमी हवा, उत्तरी हवा और दक्षिणी हवा।

यूरोप के सुदूर उत्तर के देश और उत्तरी अमेरिका के सुदूर उत्तर के स्थान बहुत ठंडे हैं। वहॉ जो बरफीली तेज़ ठंडी हवा चलती है उसे वे लोग उत्तरी हवा बोलते हैं।

जैसे मैदानों में धूल और रेत के तूफान, बाढ़, तेज़ गरमी लोगों को बहुत नुकसान पहुॅचाती हैं उसी तरह यह उत्तरी हवा वहॉ के देशों के लोगों को बहुत नुकसान पहुॅचाती है।

तो लो पढ़ो हवा की ये कुछ लोक कथाऐं जो यह बताती हैं कि इन हवाओं ने वहॉ के लोगों के साथ क्या क्या किया।

7 हवा का जन्म[24]

अमेरिका के ऐस्कीमो लोगों में कही जाने वाली यह लोक कथा यह बताती है कि हवा का जन्म ही कैसे हुआ।

एक बार की बात है कि कैनेडा के यूकोन प्रान्त में दक्षिण की तरफ एक गॉव में एक आदमी अपनी पत्नी के साथ अकेला रहता था। उसके कोई बच्चा नहीं था।

एक दिन पत्नी ने पति से कहा — "टुंड्रा में बहुत ऊपर दूर की तरफ एक अकेला पेड़ खड़ा है। तुम उस पेड़ के पास जाओ और उसके तने का एक टुकड़ा ले कर आओ। उससे तुम एक गुड्डा बनाना। उससे हम लोगों को लगेगा कि हमारे एक बच्चा है।"

सो पति घर से बाहर निकला तो उसने क्या देखा कि उसके सामने एक बहुत ही चमकीली रोशनी की लकीर जा रही थी। यह लकीर बरफ पर चॉद की एक किरन पड़ने से बन रही थी। वह लकीर टुंड्रा से हो कर जा रही थी। उसको वही रास्ता लेने के लिये कहा गया था। वह आकाश गंगा[25] थी।

---

[24] The Origin of Wind – an Eskimo folktale from Native Americans, North America. Adapted from the Web Site : http://www.worldoftales.com/Native_American_folktales/Eskimo_folktale_29.html Taken from the book "Treasury of the Eskimo Tales", by Clara Kern Bayliss. Thomas Y Crowell Company, USA. 1922. 31 Eskimo Tales.

[25] Translated for the word "Milky Way"

उसने वही रास्ता पकड़ा और चल दिया। काफी दूर चलने के बाद उसको उस चमकीले रास्ते पर एक चमकीली चीज़ देखी। जब वह वहॉ पहुँचा तो उसने देखा कि वहॉ तो एक पेड़ खड़ा है।

यह तो वही पेड़ था जिसकी खोज में वह निकला था। पेड़ छोटा ही था सो उसने अपना छोटा वाला शिकारी चाकू निकाला और उसके तने में से एक छोटा सा टुकड़ा काट लिया और उसे घर ले आया।

घर ला कर उसने उसमें से एक लड़के की मूर्ति बनानी शुरू की। उसकी पत्नी ने उसके लिये कपड़े के दो सूट बनाये और उनमें से एक जोड़ी कपड़े उसको पहना दिये। दूसरा सूट उसने उठा कर रख दिया कि जब उसका पहला सूट गन्दा हो जायेगा तब वह उसको पहना देगी।

फिर उसने पति से कहा — "अब तुम इसके लिये खिलौने वाले बरतन बना दो।"

पति बोला — "यह सब तो इसके लिये करना बेकार है क्योंकि ऐसा करने से हम लोगों की हालत पहले से कोई ज़्यादा अच्छी नहीं होगी।"

पत्नी ने कहा — "क्यों? हम तो अभी ही पहले से ज़्यादा अच्छे हैं। इस गुड्डे से पहले हमारे पास बात करने के लिये कुछ भी नहीं था सिवाय अपने बारे में बात करने के। अब कम से कम हमारे पास

यह गुड्डा तो है बात करने के लिये और हमको आनन्द देने के लिये।"

पत्नी को खुश करने के लिये पति ने उस गुड्डे के लिये खिलौने वाले बरतन बनाये। पत्नी ने गुड्डे को दरवाजे के सामने एक बैन्च पर बिठा दिया और उसके सामने उन खिलौने वाले बरतनों में खाना और पानी रख दिया जो उसके पति ने बनाये थे।

जब रात हुई तो पति पत्नी दोनों सोने के लिये चले गये। कमरे में बहुत अँधेरा था। उन्होंने कई सीटी जैसी आवाजें सुनीं तो पत्नी पति से बोली — "क्या तुम्हें ये आवाजें सुनायी पड़ रही हैं? ये उस गुड्डे की आवाजें हैं।" कह कर वह उसको जब तक हिलाती रही जब तक कि वह जाग नहीं गया।

वे दोनों उठे उन्होंने रोशनी की तो उन्होंने देखा कि गुड्डे ने खाना खा लिया था पानी पी लिया था और उसकी ऑखें चारों तरफ घूम रही थीं। पत्नी ने खुशी के मारे उसे पकड़ लिया और उसके साथ बहुत देर तक खेलती रही और उसे प्यार करती रही। जब वह थक गयी तब वे दोनों सोने के लिये चले गये।

जब वे सुबह उठे तो उन्होंने देखा कि गुड्डा तो वहॉ से चला गया है। उन्होंने उसे सारे घर में ढूँढा पर वह उनको कहीं नहीं मिला। घर से बाहर जाते हुए उसके पैरों के निशान वहॉ मौजूद थे।

वे उन निशानों के पीछे पीछे चल दिये तो वे एक नदी के किनारे पहुँच गये और वहॉ से उसके किनारे चलते हुए एक ऐसी

जगह पहुँच गये जो गॉव के बाहर थी। वहॉ जा कर वे रुक गये क्योंकि वहॉ से रास्ता केवल आकाश गंगा तक जाता था जिस पर पति वह पेड़ ढूँढने के लिये पहले ही जा चुका था।

गुड्डा उस चमकीले रास्ते पर चलता चला गया जब तक वह दिन के किनारे पर नहीं आ गया जहॉ आसमान धरती से मिलता है और दीवारें रोशनी से। उसके बराबर में ही गुड्डे ने वहॉ दीवार में एक बहुत बड़ा छेद देखा जो खाल से ढका हुआ था।

वह खाल अन्दर की तरफ को थोड़ी दबी हुई थी। जैसे उसके दूसरी तरफ से कोई ताकत उसे धक्का दे रही हो।

गुड्डा बोला — "ऐसा लगता है कि थोड़ी सी हवा ही इसको बहुत ही जानदार बना देगी।" कह कर उसने अपना चाकू निकाला और उस ढकने वाली खाल में उससे एक छेद कर दिया। तुरन्त ही वहॉ से एक बहुत ही ज़ोर की हवा गुजरी जो कभी कभी उसमें से एक ज़िन्दा रेनडियर ले कर आ रही थी।

गुड्डे ने उस छेद में से झॉक कर देखा तो उसने देखा कि उस छेद के दूसरी तरफ तो धरती के जैसी एक दूसरी दुनियॉ थी। उसने उस छेद को फिर से ढक दे दिया।

उसने हवा से कहा — "इतनी ज़ोर से मत बहो। कभी कभी ज़ोर से बहो तो कभी धीरे धीरे बहो और कभी बिल्कुल मत बहो।"

फिर वह आसमान की दीवार पर चढ़ गया और उस पर चलते चलते दक्षिण–पूर्व की तरफ निकल आया। इस तरफ भी उसने

उसमें एक छेद देखा। यह भी पहले छेद की तरह से ही ढका हुआ था और इसका ढक्कन भी अन्दर की तरफ को फूला हुआ था।

जब उसने इसका ढक्कन काटा तो उसके छेद में से भी रेनडियर पेड़ और झाड़ियॉ निकल पड़ीं। उसने जल्दी से वह छेद बन्द कर दिया और तेज़ हवा से कहा — "ओह तुम तो बहुत तेज़ हो। तुम कभी कभी तेज़ बहो कभी कभी हल्की बहो और कभी कभी बिल्कुल न बहो। धरती के लोगों को अलग अलग तरह की हवा चाहिये।"

आसमान की दीवार के सहारे सहारे चलते चलते वह फिर दक्षिण की तरफ आया। वहॉ भी उसको एक छेद दिखायी दिया जो ढका हुआ था। जब उसने उसके ढक्कन में एक छेद खोला तो वहॉ से बड़ी गरम हवा बारिश और दक्षिण के समुद्र के पानी के छींटे ले कर आयी। गुड्डे ने उस छेद को भी वही कहते हुए बन्द कर दिया जो उसने औरों से कहा था।

अब वह पश्चिम दिशा की तरफ आया तो उसने वहॉ भी एक छेद देखा। उसके ढक्कन में छेद करने पर वहॉ से समुद्र का पानी ले कर बहुत भारी बारिश और तूफान आया। उसने इसको भी वही कहा जो औरों को कहा था और फिर उत्तर पश्चिम की तरफ चला गया।

उत्तर पश्चिम का छेद खोलने पर उधर से बहुत तेज़ ठंडी हवा आयी जिसके साथ आयी बरफ। गुड्डा तो उस हवा और बरफ से

हड्डी तक जम गया। उसने तुरन्त ही वह छेद बन्द कर दिया जैसे उसने और छेद बन्द किये थे।

अब वह और आगे उत्तर की तरफ गया तो उसे उधर बहुत ही ठंडी हवा का सामना करना पड़ा। वह हवा इतनी ठंडी थी कि उसे आसमान की दीवार के साथ साथ चलना छोड़ना पड़ा और दक्षिण की तरफ आना पड़ा फिर उत्तर की तरफ वापस गया।

वहॉ तो इतना ज़्यादा ठंडा था कि उसको उस छेद का ढक्कन काटने की हिम्मत बटोरने के लिये कुछ देर तक इन्तजार करना पड़ा। जब उसने उसका ढक्कन काटा तो उधर से बहुत सारी बरफ के साथ इतनी तेज़ ठंडी हवा का झोंका आया कि उसने सारे धरती को बरफ से ढक दिया।

वह इतना कड़क ठंडा था कि उसे वह छेद तुरन्त ही ढक देना पड़ा। उसने उससे कहा कि वह केवल जाड़े के मौसम के बीच में ही आये ताकि लोग बिना जाने उसकी चपेट में न आयें। उनको पता होगा कि वह कब वहॉ आयेगा तो वे उसके लिये तैयारी कर लेंगे।

वहॉ से फिर वह गरम जगहों के लिये धरती के बीच की तरफ चला जहॉ आ कर उसने देखा कि आसमान तो लम्बे लम्बे डंडों पर खड़ा हुआ है जैसे कि कोई कोण वाला मकान खड़ा हो। पर वे डंडे किसी ऐसी सुन्दर चीज़ के बने थे जिसको वह नहीं जानता था।

चलते चलते वह फिर उसी गॉव में आ गया जहॉ से उसने अपनी यात्रा शुरू की थी और अपने घर में चला गया। गुड्डा उस

गॉव में काफी दिनों तक रहा। फिर जब उसके मॉ बाप जिन्होंने उसे बनाया था मर गये तो उसको गॉव के दूसरे लोगों ने रख लिया।

और इस तरह से वह पीढ़ी दर पीढ़ी रहता चलता चला आ रहा था कि आखिर वह मर गया।

उसकी मौत के बाद से अब उसी की याद में माता पिता अपने बच्चों के लिये गुड्डे गुड़िया बनाते हैं जिसने हवा आने के लिये आसमान में छेद किये थे और धरती के लिये साल के छह मौसमों के लिये उसको नियमित[26] किया था।

[26] Translated for the word “Regulated”.

8 एक लड़का और उत्तरी हवा[27]

उत्तरी हवा की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के नौर्स देशों[28] में से नौर्वे देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि नौर्वे देश में एक गरीब विधवा अपने बेटे के साथ रहती थी। एक दिन वह अपने बेटे से बोली — "बेटे, नीचे वाले कमरे[29] से ज़रा आखिरी आटा उठा लाओ ताकि मैं डबल रोटी बना दूँ।"

लड़का एक कटोरा ले कर आटा लाने के लिये नीचे वाले कमरे में गया। जैसे ही वह लड़का आटा ले कर उस कमरे से बाहर निकला तो उत्तरी हवा ने उसके साथ एक नीच चाल खेलने का निश्चय किया।

वह ज़ोर से बहा, एक ज़ोर का हवा का झोंका आया और उसने वह आटा उड़ा कर उस लड़के के चेहरे पर और घर के बाहर बिखेर दिया।

वह लड़का बेचारा ऊपर आया और सब कुछ अपनी माँ को बताया। उसने केवल उसको गले लगाया और बोली — "बेटे, मुझे

---

[27] The Boy and the North Wind – a folktale from Norway, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=118
Retold and written by Mike Lockett.

[28] Norse countries are located in the far North part of the Europe. They are five in number – Denmark, Finland, Iceland, Norway, and Sweden,

[29] Translated for the word "Cellar". Cellar is a room in the basement where normally liquor is kept. It is used as a store room also in western houses.

नहीं मालूम अब मैं क्या करूँ क्योंकि अब तो हमारे पास खाने के लिये कुछ भी नहीं है।"

उस लड़के की माँ ने उसको इस तरह से बता कर बड़ा किया गया था कि अगर कभी किसी से कोई बुरा काम हो जाये तो उसको ठीक कर लेना चाहिये सो उसने सोचा कि उत्तरी हवा का यह बुरा काम ठीक करना चाहिये।

ऐसा सोच कर उसने तुरन्त ही घर छोड़ दिया और उत्तरी हवा ने जो आटा फैलाया था उसके पीछे पीछे चल दिया। वह लड़का चलता रहा, चलता रहा, चलता रहा जब तक कि वह उत्तरी हवा के घर तक नहीं पहुँच गया।

लड़के ने उत्तरी हवा को नमस्ते की और उससे बोला — "मुझे मालूम है कि तुमने मेरे साथ अभी अभी एक चाल खेली है पर देखो, मैं और मेरी माँ बहुत गरीब हैं।

तुमने हमारा आखिरी आटा उड़ा दिया है और अब हम लोग भूखे हैं। तुमको अपने इस काम को ठीक करना चाहिये और हमारा आटा हमें वापस दे देना चाहिये।"

उत्तरी हवा को यह सब सुन कर बहुत बुरा लगा कि उसने एक गरीब माँ और बेटे को तंग किया।

वह बोला — "बच्चे, मुझे अपने इस काम का बहुत अफसोस है। मैं तुम्हारा आटा तो तुमको वापस नहीं दे सकता पर इसके बजाय मैं तुमको एक और अच्छी चीज़ देता हूँ।"

सो उसने एक कपड़ा निकाला और उस लड़के को देते हुए कहा — "लो यह लो। यह एक खास कपड़ा है। इसको किसी मेज पर बिछाना और इससे कहना "बिछ जा ओ कपड़े बिछ जा।" बस तुमको खाने की कभी कमी नहीं रहेगी।"

लड़के ने उत्तरी हवा को धन्यवाद दिया और उस कपड़े को अपनी बगल में दबा कर घर वापस चल दिया। वह बहुत देर तक चलता रहा पर फिर रात हो गयी तो वह रात को सोने के लिये एक सराय में रुक गया।

सराय के मालिक ने पूछा — "तुम इस सराय का किराया कैसे दोगे जबकि तुम कहते हो कि तुम्हारे पास न खाने के लिये पैसे हैं और न सोने के लिये?"

लड़के ने उत्तरी हवा का दिया हुआ कपड़ा मेज पर बिछाया और बोला — "बिछ जा ओ कपड़े बिछ जा।"

और देखते ही देखते वह मेज बहुत ही स्वादिष्ट खाने और पीने के सामान से भर गयी। उस समय उस मेज पर उस सराय में हर रहने वाले के लिये काफी खाना था।

यह देख कर सराय के मालिक ने उसे सोने के लिये अपना कमरा दे दिया। रात को वह उस लड़के के कमरे में चुपके से घुसा और उसका वह जादुई मेजपोश उठा कर उसकी जगह ठीक वैसा ही एक मेजपोश रख दिया और कमरे में से निकल आया।

सुबह उठ कर लड़का अपने घर चला आया। घर आ कर उसने वह मेजपोश अपनी माँ को दिखाया और अपनी माँ को अपनी अच्छी किस्मत के बारे में बताया।

फिर वह मेजपोश मेज पर फैला कर बोला — "बिछ जा ओ कपड़े बिछ जा।" पर वहाँ तो कुछ भी नहीं हुआ।

माँ बोली — "बेटा, तुमको धोखा दिया गया है।"

उस लड़के को इस तरह से बता कर बड़ा किया गया था कि अगर किसी से कभी कोई बुरा काम हो जाये तो उसको ठीक कर लेना चाहिये सो उसने सोचा कि उस उत्तरी हवा को एक मौका और देना चाहिये कि वह अपना बुरा काम ठीक कर ले।

सो वह फिर उत्तरी हवा के पास चल दिया। वहाँ जा कर वह बोला — "वह कपड़ा जो तुमने मुझे दिया है वह तो काम नहीं करता। मैं जानता हूँ कि तुम मुझे और मेरी माँ को भूखा नहीं देख सकते पर तुमको अपना काम भी ठीक से करना चाहिये इसलिये तुम हमारा आटा हमें वापस कर दो।"

उत्तरी हवा बोला — "मैं तुम्हारा आटा तो वापस नहीं कर सकता पर मैं तुमको एक और अच्छी चीज़ देता हूँ।"

कह कर उत्तरी हवा ने उस लड़के को एक खास बकरी दी और कहा — "देखो यह बकरी पैसे देती है। बस तुमको इतना कहना है कि "बकरी, बकरी, पैसे दो।" और तुम्हारे पास तुम्हारी जरूरतों को पूरा करने के लिये काफी पैसा आ जायेगा।"

लड़के ने उत्तरी हवा को धन्यवाद दिया और उस बकरी को ले कर घर चल दिया। रात को आराम करने के लिये वह फिर उसी सराय में ठहरा।

सराय के मालिक ने पूछा कि तुम इस सराय के पैसे कैसे दोगे? तुम्हारे पास तो न खाने के लिये पैसे हैं और न सराय में ठहरने के लिये।

लड़का सराय के बाहर गया जहाँ उसकी बकरी बँधी हुई थी। उसने उससे कहा — "बकरी, बकरी, पैसे दो।"

बकरी ने एक डकार ली और उसके मुँह से बहुत सारे सिक्के गिर पड़े। सराय के मालिक ने जब यह सब देखा तो रात को उस लड़के के सो जाने के बाद उसकी बकरी को चुरा लिया और उसकी जगह दूसरी वैसी ही एक बकरी रख दी।

सुबह वह लड़का उठा और अपनी बकरी ले कर अपने घर चला गया। वहाँ जा कर उसने उस बकरी को अपनी माँ को दिखाया और बोला — "बकरी, बकरी, पैसे दो।"

पर वहाँ तो कुछ भी नहीं हुआ। उसकी माँ फिर बोली — "मुझे अफसोस है बेटा कि तुमको फिर से धोखा दिया गया है।"

उस लड़के की माँ ने उसको इस तरह से बता कर बड़ा किया गया था कि अगर कभी किसी से कोई बुरा काम हो जाये तो उसको ठीक कर लेना चाहिये सो उसने सोचा कि उस उत्तरी हवा को एक मौका और देना चाहिये ताकि वह अपना बुरा काम ठीक कर ले।

सो वह फिर एक बार उत्तरी हवा के पास चल दिया। वहॉ जा कर उसने उत्तरी हवा से कहा — "तुम्हारी बकरी पैसे नहीं देती। मुझे मालूम है कि तुम मुझे और मेरी मॉ को भूखा नहीं देखना चाहते इसलिये तुमको अपना काम तो कम से कम ठीक से करना चाहिये और हमारा आटा हमें वापस कर देना चाहिये।"

उत्तरी हवा फिर बोला — "मैं तुम्हारा आटा तो वापस नहीं कर सकता पर मैं तुमको एक और अच्छी चीज़ देता हूॅ।"

अब की बार उत्तरी हवा ने लड़के को एक डंडा दिया और बोला — "यह डंडा तुम्हारी हर परेशानी को हमेशा के लिये दूर कर देगा। जब तुम यह कहोगे "मारो डंडे मारो।" तो यह वही करेगा जो इसको करना है।

जब तुम इसको रोकना चाहो तो इसको बोलना — "रुक जाओ ओ डंडे, रुक जाओ।"

लड़के ने उत्तरी हवा को धन्यवाद दिया और वह डंडा ले कर अपने घर चल दिया। वह आराम करने के लिये फिर उसी सराय में रुका।

इस बार सराय के मालिक ने उस लड़के से यह नहीं पूछा कि वह उसको पैसे कैसे देगा। उसने लड़के को ठीक से खिलाया पिलाया और अपने कमरे में सुला दिया।

काफी रात गये वह उस लड़के के कमरे में आया और उसकी जादू की डंडी से अपनी डंडी बदलने लगा पर इस बार वह लड़का जाग गया और उस डंडी से बोला — "मारो डंडे मारो।"

वह डंडी हवा में उड़ी और सराय के मालिक को मारने लगी। वह तब तक उसको मारती रही जब तक उसने यह नहीं कह दिया कि उसी ने उसके मेजपोश और बकरी चुराये थे और अब वह उनको वापस कर देगा।

तब लड़का बोला — "रुक जाओ ओ डंडे, रुक जाओ।"

उसके ऐसा कहते ही वह डंडा रुक गया और फिर वह सराय का मालिक वह मेजपोश और बकरी लाने चला गया। वे दोनों चीज़ें ला कर उसने उस लड़के को दे दीं।

लड़के ने अपना जादुई मेजपोश, बकरी और डंडा लिया और अपने घर चला गया।

अब उसके और उसकी मॉ के पास कभी खाने की कमी नहीं रही, कभी पैसे की कमी नहीं रही और जब भी कोई उनके साथ खराब काम करता तो उसके लिये उनके पास उसको सजा देने के लिये डंडा था।

9 एक लड़का जो उत्तरी हवा के पास गया[30]

उत्तरी हवा की यह दूसरी लोक कथा भी नौर्स देशों की लोक कथाओं से ली गयी है और करीब करीब वैसी ही है जैसी इससे पहली तुमने पढ़ी थी।

एक बार की बात है कि एक बुढ़िया थी जिसका पति मर गया था। उसके एक बेटा था। वह बुढ़िया बहुत गरीब थी और साथ में कमजोर भी थी सो उसने अपने बेटे को ऊपर भेजा कि वह वहॉ से कुछ खाने के लिये ले आये जिससे वह खाना पका सके।

लड़का ऊपर गया और खाना निकाला और उस कमरे से बाहर आ कर नीचे आ रहा था कि इतने में उत्तरी हवा बहुत ज़ोर से बहता हुआ आया और उसके हाथ में से उसका खाना ले कर उसको उड़ा कर ले गया।

वह लड़का बेचारा फिर से उस कमरे में गया और फिर से खाना निकाला और फिर उसको ले कर नीचे चला। जब वह सीढ़ियॉ उतर रहा था तो एक बार फिर से उत्तरी हवा ज़ोर से बहता हुआ आया और उसके हाथ में से उसका खाना ले कर उसको उड़ा कर ले गया।

---

[30] The Lad Who Went to the North Wind – a folktale from Norse Countries, Europe.
Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ptn/ptn44.htm
Taken from “Popular Tales from the Norse”. By George Webbe Dasent. 1904. It is freely available on the above Web Site.
This folktale is very similar to the Tale No 6 “Ek Ladaka Aur Uttaree Havaa” given before this.

वह लड़का बेचारा फिर से उस कमरे में गया और फिर से खाना निकाला और फिर उसको ले कर नीचे चला। जब वह सीढ़ियॉ उतर रहा था तो एक बार फिर से उत्तरी हवा ज़ोर से बहता हुआ आया और फिर से उसके हाथ से उसका खाना ले कर उसको उड़ा कर ले गया। यह उसके साथ तीसरी बार हुआ।

इस बार वह लड़का बहुत गुस्सा हो गया। उसने सोचा कि उत्तरी हवा को उसके साथ इस तरीके से बरताव नहीं करना चाहिये था। उसने फिर यह भी सोचा कि वह उसको ढूँढता है और उससे अपना खाना वापस मॉगता है।

सो वह उत्तरी हवा की खोज में चल दिया। रास्ता बहुत लम्बा था। वह चलता रहा चलता रहा। आखिर वह उसके घर पहुँच ही गया।

उसके घर जा कर लड़का बोला — "गुड डे उत्तरी हवा। कल हमारे घर आने का आपको बहुत बहुत धन्यवाद।"

उत्तरी हवा अपनी तेज़ और गहरी आवाज में बोला — "तुमको भी गुड डे और तुमको भी मुझसे यहॉ मिलने के आने के लिये धन्यवाद। तुम्हें मुझसे क्या चाहिये।"

"ओह मैं तो बस तुमसे यह कहने आया था कि कल जब मैं अपने ऊपर वाले कमरे से सीढ़ियों से नीचे आ रहा था तब तुमने मेरा जो खाना ले लिया था उसे मेहरबानी करके वापस कर दो। क्योंकि हमारे पास बहुत खाना नहीं है।

अगर तुम इसी तरीके से हमारे खाने पर नजर डालते रहे तो हमारे तो भूखों मरने के दिन आ जायेंगे।"

उत्तरी हवा बोला — "मैंने तुम्हारा खाना नहीं लिया पर अगर तुमको खाने की इतनी ज़्यादा जरूरत है तो मैं तुम्हें एक कपड़ा देता हूँ जिससे तुम्हें वह सब मिल जायेगा जो तुम चाहोगे। बस उससे यह कहना "ओ कपड़े बिछ जाओ और हमारे लिये सब तरह का खाना लगाओ।"

लड़का यह कपड़ा देख कर बहुत खुश हुआ। उसको ले कर वह वहाँ से चल दिया। पर क्योंकि उसका घर वहाँ से बहुत दूर था और वह एक दिन में अपने घर नहीं पहुँच सकता था सो रास्ते में एक सराय में रुक गया।

वे जब वहाँ शाम का खाना खाने बैठे तो उसने अपना कपड़ा बिछाया और उससे कहा "ओ कपड़े बिछ जाओ और हमारे लिये सब तरह का खाना लगाओ।"

कपड़ा तुरन्त ही बिछ गया और उस कपड़े पर बहुत सारा अच्छा अच्छा खाना लग गया। यह देख कर सराय के मालिक की तो आँखें फटी की फटी रह गयीं, खास करके सराय के मालिक की पत्नी की।

जब सब सो गये तो रात के घुप अँधेरे में सराय के मालिक की पत्नी ने लड़के का कपड़ा चुरा लिया। और उसकी जगह उसी के जैसा दूसरा कपड़ा रख दिया।

अब वह तो उत्तरी हवा का दिया हुआ कपड़ा नहीं था सो वह तो सूखी डबल रोटी भी नहीं दे सकता था। सुबह को जब वह लड़का उठा तो उसने अपना कपड़ा उठाया और अपने घर चल दिया।

जब वह माँ के पास पहुँचा तो उसने उससे कहा — "माँ मैं उत्तरी हवा के पास गया था। वह तो बहुत अच्छा आदमी है उसने मुझे एक कपड़ा दिया और जब भी मैं उससे कहूँ "ओ कपड़े बिछ जाओ और हमारे लिये सब तरह का खाना लगाओ।" तो मुझे जो खाना चाहिये वह मुझे दे देता है।"

माँ ने आश्चर्य प्रगट करते हुए कहा — "अच्छा ऐसा है क्या? पर विश्वास तो देखने से ही होता है सो जब तक मैं उसे अपनी आँखों से नहीं देख लूँगी मुझे विश्वास नहीं होगा।"

सो लड़के ने वह कपड़ा निकाला एक मेज निकाली। वह कपड़ा मेज पर बिछाया और बोला — "ओ कपड़े बिछ जाओ और हमारे लिये सब तरह का खाना लगाओ।"

पर उस कपड़े से तो एक सूखी डबल रोटी भी नहीं निकली। लड़का कुछ नाउम्मीदी से बोला — "अब मैं क्या कर सकता हूँ

सिवाय इसके कि मैं उत्तरी हवा के पास दोबारा जाऊँ।" और वह फिर से उत्तरी हवा के पास चल दिया।

वह शाम तक उत्तरी हवा के घर पहुँचा।

"गुड ईवनिंग जनाब।"

उत्तरी हवा ने जवाब दिया — "गुड ईवनिंग।"

लड़का बोला — "मुझे अपने उस खाने के बदले में कुछ चाहिये जो आपने मुझसे ले लिया था। क्योंकि जो कपड़ा आपने मुझे दिया था वह तो एक पैनी का भी नहीं।"

उत्तरी हवा ने कहा — "मेरे पास किसी कोई खाना नहीं है। मैंने किसी का खाना नहीं लिया लेकिन देखो वह एक बकरा खड़ा है जो सोने के डकैट[31] देता है जैसे ही तुम उससे कहो "बकरे बकरे मुझे पैसे दो।"

उस लड़के ने वह सुन्दर बकरा उठाया और अपने घर की तरफ चल दिया। क्योंकि उसका घर वहाँ से बहुत दूर था और वह एक दिन में वहाँ नहीं पहुँच सकता था सो वह रात गुजारने के लिये फिर से उसी सराय में रुक गया जिसमें वह पहले ठहरा था।

इससे पहले कि वह कुछ और करता उसने उस बकरे को जाँचने का निश्चय किया। उसने उससे वही कहा जो उत्तरी हवा ने उससे कहने के लिये कहा था और उसने देखा कि उत्तरी हवा ने सही ही कहा था।

[31] Ducat is the then currency in European countries.

जब सराय के मालिक ने उस बकरे को देखा तो उसको लगा कि यह बकरा तो बहुत अच्छा है सो जब वह लड़का सो गया तो उसने उसका पैसे देने वाला बकरा चुरा लिया और एक मामूली सा बकरा उसकी जगह रख दिया।

अगली सुबह लड़का उठा अपना बकरा उठाया और अपने घर की तरफ चल दिया।

घर पहुँच कर उसने अपनी माँ से कहा — "माँ उत्तरी हवा तो तो एक बहुत ही मजेदार आदमी है। अब की बार उसने मुझे एक बकरा दिया है जो मुझे सोने के डकैट देता है। बस मुझे उससे यह कहना है "बकरे बकरे मुझे पैसे दो।"

माँ बोली — "मैं कहती हूँ कि यह जरूर सच होगा पर देखने से विश्वास होता है सो जब तक मैं देख न लूँ मैं विश्वास नहीं कर सकती।"

सो लड़के ने कहा "बकरे बकरे मुझे पैसे दो।" पर इस बकरे ने और जो कुछ भी किया सो किया पर डकैट नहीं दिये।

सो वह लड़का फिर से उत्तरी हवा के घर चल दिया। इस बार उसके घर जा कर वह उस पर चिल्लाया — "आपका बकरा तो

किसी काम का नहीं था। मुझे अपना खाना वापस चाहिये।"

उत्तरी हवा बोला — "अब मेरे पास तुम्हें देने के लिये कुछ भी नहीं है सिवाय इस डंडी के

जो उस कोने में खड़ी है। बस तुम्हें उससे यही कहना है "डंडी डंडी गिर पड़ो।" वह जब तक मारती रहेगी जब तक तुम यह नहीं कहोगे "डंडी डंडी रुक जाओ।"

लड़के ने डंडी उठायी और अपने घर की तरफ चल दिया। क्योंकि उसका घर वहाँ से बहुत दूर था और वह एक दिन में वहाँ नहीं पहुँच सकता था सो वह रात गुजारने के लिये फिर से उसी सराय में रुक गया जिसमें वह पहले ठहरा था।

इस बार जब सराय के मालिक ने उस डंडी को देखा तो उसको लगा कि यह डंडी भी पिछले कपड़े और बकरे की तरह से ही होगी सो जब वह लड़का सो गया तो वह उसकी डंडी चुराने गया। जैसे ही उसने उस डंडी को उठाने की कोशिश की तो वह लड़का तुरन्त बोला "डंडी डंडी गिर पड़।"

और बस उस डंडी ने सराय के मालिक को मारना शुरू कर दिया। मालिक ने इधर उधर चारों तरफ कूदना शुरू कर दिया। जब वह काफी पिट चुका तब उसने लड़के से कहा कि वह उसको रोके नहीं तो डंडी तो वह उसको तो मार ही डालेगी।

वह बोला — "मैं तुम्हें तुम्हारा कपड़ा और बकरा दोनों वापस कर दूँगा तुम बस इस डंडी को रोक दो।"

जब लड़के ने देखा कि अब सराय का मालिक काफी पिट लिया तब वह बोला — "डंडी डंडी रुक जाओ।"

उसके कहते ही उस डंडी ने उसको पीटना बन्द कर दिया। लड़के ने वह कपड़ा अपनी जेब में रखा, डंडी एक हाथ में ली बकरे की रस्सी दूसरे हाथ में ली और अपना खाना ले कर अपने घर की तरफ चल दिया।

10 उत्तरी हवा की भेंट[32]

उत्तरी हवा की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश में कही सुनी जाने वाली लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार जैपोन[33] नाम का एक किसान एक प्रायर[34] के खेत पर रहता था और वह खेत एक पहाड़ी के ऊपर था। वहाँ उत्तरी हवा[35] आ कर अक्सर ही उसकी खेती खराब कर जाया करती थी।

एक दिन उसने निश्चय किया कि मैं इस हवा की खोज में जाऊँगा जो मेरा इतना नुकसान करती है। उसने अपनी और पत्नी और बच्चों से विदा कहा और पहाड़ों की तरफ चल दिया।

जब वह जिनव्रीनो किले[36] के पास पहुँचा तो उसने उस किले का दरवाजा खटखटाया। उत्तरी हवा की पत्नी ने खिड़की से झाँका और वहीं से पूछा — "दरवाजे पर कौन है?"

किसान जैपोन बोला — "मैं हूँ जैपोन। क्या आपके पति अन्दर हैं?"

---

[32] The North Wind's Gifts (Story No 83) – a folktale from Mugello area, Italy, Europe.
Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

[33] Jeppone is the name of the peasant

[34] A title given to a Monastic Superior in a Monastery

[35] Northern Winds are normally are very cold and spoil the harvests.

[36] Ginevrino Castle

पत्नी बोली — "अभी तो वह बाहर गये हैं, समुद्र के किनारे लगे पेड़ों के बीच में बहने के लिये, पर जल्दी ही वापस आ जायेंगे। तुम अन्दर आ कर उनका इन्तजार कर सकते हो।"

जैपोन अन्दर चला गया और बैठ कर उत्तरी हवा का इन्तजार करने लगा। करीब एक घंटे बाद उत्तरी हवा लौटा तो जैपोन बोला — "गुड डे उत्तरी हवा।"

"तुम कौन हो?"

"मैं एक किसान हूँ और मेरा नाम जैपोन है।"

"तुम्हें क्या चाहिये?"

किसान बोला — "आप अच्छी तरह जानते हैं कि आप हर साल मेरी उपज खराब कर देते हैं। और केवल आप ही की वजह से मैं और मेरा परिवार भूखा मरता है।"

उत्तरी हवा ने पूछा — "तो फिर अब तुम मुझसे क्या चाहते हो?"

किसान बोला — "मैं आपके दिये हुए अपने उन सब दुखों के बदले में कुछ चाहता हूँ।"

उत्तरी हवा ने उससे पूछा — "बोलो मैं तुमको क्या दूँ?"

किसान बोला — "यह तो मैं आप पर छोड़ता हूँ कि आप मुझे क्या देना चाहते हैं।"

उत्तरी हवा का दिल जैपोन के पास गया और उसने उससे कहा — "लो यह बक्सा लो और जब भी तुमको भूख लगे तो इसको खोलना और जो खाना पीना चाहो वह मॉग लेना। वह तुमको मिल जायेगा। पर इस बक्से के बारे में किसी को बताना नहीं नहीं तो तुम इसे खो दोगे और फिर तुम्हारे पास कुछ भी नहीं बचेगा।"

जैपोन ने उत्तरी हवा को धन्यवाद दिया और चल दिया। रास्ते में वह एक जंगल से गुजर रहा था तो उसे कुछ भूख लग आयी। उसने बक्सा खोला और कहा — "मुझे शराब चाहिये। डबल रोटी चाहिये और डबल रोटी के साथ कुछ खाने को चाहिये।"

उसने इतना कहा ही था कि बक्से में से एक बहुत ही स्वादिष्ट डबल रोटी, एक बोतल शराब और एक सूअर के मॉस का टुकड़ा निकल आया। जैपोन ने जंगल के बीच वह स्वादिष्ट खाना खाया और फिर अपनी यात्रा पर चल दिया।

अपने घर पहुँचने से पहले ही वह अपनी पत्नी और बच्चों से मिला जो अपने घर से चल कर उससे मिलने घर के बाहर चले आये थे। उन्होंने पूछा — "तुम्हारी यात्रा कैसी रही? सब कुछ ठीक रहा न?"

किसान बोला — "हॉ सब कुछ बहुत ही अच्छा रहा।" कह कर वह उन सबको घर के अन्दर ले गया और कहा — "चलो अब तुम सब लोग मेज पर बैठ जाओ अब हम लोग खाना खायेंगे।" सब तुरन्त ही मेज पर बैठ गये।

मेज पर बैठ कर जैपोन ने बक्से को खोला और उससे कहा — "सबके लिये शराब, डबल रोटी और खाने की कई सारी चीज़ें दो।"

तुरन्त ही सबके लिये बहुत ही स्वादिष्ट खाना मेज पर लग गया। सबने बहुत दिनों बाद इतना स्वदिष्ट खाना खाया सो खूब पेट भर कर खाया।

जब खाना खत्म हो गया तो जैपोन ने अपनी पत्नी से कहा — "इस बात को प्रायर से मत कहना कि मैं यह बक्सा ले कर आया हूँ नहीं तो यह बक्सा उसको भी चाहियेगा और वह मुझसे इसे ले जायेगा।"

पत्नी बोली — "ओह मैं तो उससे यह बात सपने में भी कहने की नहीं सोचूँगी।"

यात्रा के बाद जब जैपौन घर आ गया तो प्रायर ने जैपोन की पत्नी को बुलाया और उससे पूछा — "तुम्हारा पति कहीं बाहर गया था न? वापस आ गया? कैसी रही उसकी यात्रा?"

पत्नी ने कहा — "ठीक रही।"

प्रायर बोला — "मुझे यह सुन कर खुशी हुई। क्या वह कोई ऐसी चीज़ ले कर आया है जो बताने लायक हो?"

इस तरह वह एक सवाल से दूसरा सवाल निकालता रहा और इससे पहले कि जैपोन की पत्नी जानती कि वह क्या कर रही है

उसने उसको उस जादुई बक्से के बारे में उसको सब कुछ बता दिया।

यह सुन कर प्रायर ने जैपोन को तुरन्त ही बुला भेजा और बोला — "जैपोन, मेरे अच्छे दोस्त, मैंने सुना है कि तुम्हारे पास एक बहुत ही अच्छा बक्सा है। क्या मैं उसे देख सकता हूँ?"

जैपोन ने एक बार तो सोचा कि वह उस सारी कहानी को झूठ कह दे पर क्योंकि उसकी पत्नी ने इस बात को उससे कहा था इसलिये वह अब यह नहीं कर सकता था सिवाय इसके कि वह प्रायर को वह बक्सा दिखाता और बताता कि वह कैसे काम करता है।

"हॉ हॉ क्यों नहीं।" वह घर आया और अपना बक्सा प्रायर के पास ले जा कर उसे दिखाया। देखते ही प्रायर बोला — "जैपोन, यह बक्सा तो तुम्हें मुझे देना पड़ेगा। इसे तुम मुझे दे दो।"

जैपोन बोला — "अगर यह बक्सा मैं तुमको दे दूँगा तो फिर मैं क्या करूँगा। मैं खाना कहॉ से खाऊँगा। तुमको तो मालूम है कि मेरी सारी उपज खराब हो गयी है और अब मेरे पास खाने के लिये कुछ भी नहीं है।"

प्रायर बोला — "अगर यह बक्सा तुम मुझे दे दो तो मैं तुमको जितना अन्न तुम चाहोगे उतना अन्न दे दूँगा, जितनी शराब तुम चाहोगे उतनी शराब मैं तुमको दे दूँगा। इसके अलावा और भी जो

कुछ तुम चाहोगे वह सब मैं तुमको दे दूँगा। पर यह बक्सा तुम मुझे दे दो।"

जैपोन के पास उस बक्से को प्रायर को देने के अलावा और कोई चारा नहीं था सो उसने वह बक्सा प्रायर को दे दिया और बदले में उसको क्या मिला?

प्रायर ने उसको कुछ बोरे अनाज के दिये, और बस। जैपोन फिर से अपनी बुरी हालत में वापस आ गया था और यह सब उसकी पत्नी वजह से हुआ था।

उसने अपनी पत्नी से कहा — "तुम्हारी वजह से मैंने अपना बक्सा खोया। उत्तरी हवा ने मुझसे कहा था कि तुम इसके बारे में किसी से कहना नहीं और मैंने उसका कहा नहीं माना तो अब मैं उसके वापस जाने की हिम्मत भी कैसे कर सकता हूँ।"

पर मरता क्या न करता। उसने हिम्मत बटोरी और एक बार फिर से उत्तरी हवा के किले की तरफ चल दिया। वहाँ पहुँच कर उसने एक बार फिर उत्तरी हवा के किले का दरवाजा खटखटाया।

उत्तरी हवा की पत्नी ने खिड़की से बाहर झाँका और पूछा — "बाहर कौन है?"

"मैं हू जैपोन।"

तभी उत्तरी हवा ने बाहर देखा और पूछा — "जैपोन, अब तुम्हें क्या चाहिये?"

जैपोन बोला — "क्या आपको याद है कि मैं आपसे एक बक्सा ले गया था? वह बक्सा मेरे मालिक ने मुझसे ले लिया और फिर वापस नहीं दिया। मैं तो फिर से गरीब और भूखा रह गया।"

उत्तरी हवा बोला — "मैंने तुमसे कहा था न कि इसके बारे में तुम किसी को बताना नहीं इसलिये अब तुम यहाँ से चले जाओ। अब मैं तुमको कुछ और नहीं देने वाला।"

किसान गिड़गिड़ाया — "जनाब केवल आप ही तो मेरे नुकसान को पूरा कर सकते हैं। मुझ पर मेहरबानी कीजिये।"

सो दोबारा उत्तरी हवा का दिल जैपोन के पास गया और उसने एक सोने का बक्सा निकाल कर उसको देते हुए कहा — "इस बक्से को तब तक मत खोलना जब तक तुम भूख से बिल्कुल परेशान न हो जाओ नहीं तो यह तुम्हारी बात नहीं मानेगा।"

जैपोन ने उत्तरी हवा को धन्यवाद दिया और अपने घर की तरफ चल दिया। इस बार वह घाटी की तरफ से आया। जल्दी ही उसे भूख लग आयी। उसने वह सोने का बक्सा खोला और बोला — "मुझे दो।"

तुरन्त ही बक्से में से एक बड़े साइज़ का आदमी[37] निकल पड़ा। उसके हाथ में एक बड़ा सा डंडा था। निकलते ही उसने जैपोन को उस डंडे से पीटना शुरू कर दिया।

[37] Translated for the word "Giant"

जितनी जल्दी जैपोन वह बक्सा बन्द कर सका उसने वह बक्सा बन्द कर दिया और फिर अपने घर की तरफ चल दिया। यह मार खा कर उसका सारा शरीर अकड़ रहा था और दर्द कर रहा था। वह काफी घायल भी हो गया था।

पहले की तरह से उसकी पत्नी और बच्चे उसको लेने के लिये घर के बाहर तक आये और उससे पूछा कि उसका सफर कैसा रहा।

उसने कहा — "ठीक रहा। अबकी बार मैं पहले बक्से से भी ज़्यादा अच्छा बक्सा ले कर आया हूँ।"

घर में अन्दर जा कर उसने उन सबको मेज के चारों तरफ बिठाया और वह सोने का बक्सा खोला। इस बार केवल एक नहीं बल्कि दो दो बड़े आदमी डंडा लिये निकले और उसके परिवार को मारने लगे।

उसकी पत्नी और बच्चे तो डंडे की मार खा कर बेचारे चीखने लगे पर वे दोनों आदमी रुके ही नहीं जब तक उस किसान ने वह बक्सा बन्द नहीं कर दिया।

फिर वह अपनी पत्नी से बोला — "अब तुम प्रायर के पास जाओ और उसे बताना कि मैं इस बार पहले से भी ज़्यादा अच्छा बक्सा ले कर आया हूँ।"

अगले दिन जैपोन की पत्नी प्रायर के पास गयी तो प्रायर ने अपना हर बार वाला सवाल पूछा — "सो जैपोन अपनी यात्रा से वापस आ गया। इस बार वह क्या ले कर आया है?"

जैपोन की पत्नी बोली — "इस बार तो वह पहले से भी बढ़िया बक्सा ले कर आया है प्रायर जी। वह ठोस सोने का बना है और जो खाना वह देता है वह तो लोग बस सपने में ही सोच सकते हैं। पर जैपोन बोलता है कि कुछ भी हो जाये अबकी बार वह इस बक्से को किसी को नहीं देगा।"

यह सुन कर प्रायर की उस बक्से को लेने की इच्छा बहुत ज़ोर पकड़ गयी और उसने जैपोन को बुला बेजा।

जब जैपोन प्रायर के पास पहुँचा तो प्रायर बड़ी नरमी से बोला — "जैपोन तुम नहीं जानते कि तुम्हारे आने से मैं कितना खुश हूँ। और वह भी जब जब कि तुम पहले वाले बक्से से भी बढ़िया बक्से के साथ वापस आये हो। इसे कम से कम मुझे दिखाओ तो।"

जैपोन मुस्कुराता हुआ बोला — "मैं ऐसा कर तो सकता हूँ पर फिर तुम उसको भी मुझसे ले लोगे।"

प्रायर उसको कुछ विश्वास दिलाता हुआ बोला — "नहीं नहीं, मैं वायदा करता हूँ कि मैं उसको तुमसे बिल्कुल नहीं लूँगा।"

जैपोन ने जब उस चमकते हुए सोने के बक्से का एक कोना ही प्रायर को दिखाया तो वह तो अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं कर

सका कि वह बक्सा इतना सुन्दर हो सकता था। उसका मन उस बक्से को लेने के लिये लालायित हो उठा।

उसने जैपोन से तुरन्त ही कहा — "जैपोन, इसको तुम मुझे दे दो और मैं तुमको तुम्हारा पुराना वाला बक्सा अभी ला कर दे देता हूँ।

तुम इस सोने के बक्से का क्या करोगे। इसको तुम मुझे दे दो और मैं तुमको वह तुम्हारा पुराना वाला बक्सा वापस दे देता हूँ। और इसके बदले में और भी जो कुछ तुम चाहो वह मैं तुमको सब दे दूँगा।"

जैपोन ने कुछ अविश्वास दिखाते हुए उससे पूछा — "क्या तुम ठीक कह रहे हो?"

प्रायर बोला — "हाँ हाँ मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ।" कह कर वह उसका पुराना वाला बक्सा अन्दर से निकाल लाया और उसको जैपोन को दे दिया।

जैपोन ने अपना पुराना वाला बक्सा उससे ले लिया और नया सोने का बक्सा उसको देते हुए बोला — "प्रायर, इस बक्से को खोलने से पहले तुम ज़रा सावधान रहना। जब तक तुमको बहुत अच्छी तरह से भूख न हो इस बक्से को मत खोलना।"

प्रायर बोला — "यह बक्सा तो मेरे पास बड़े अच्छे समय से आया है। कल मेरे घर बिशप[38] आ रहे हैं और उनके साथ में और

[38] Bishop is a higher rank man in Church, "Paadaree" has been translated for the word priests.

भी कुछ पादरी आ रहे हैं। मैं उनको दोपहर तक भूखा रखूँगा और फिर बक्सा खोल कर बहुत अच्छा खाना खिलाऊँगा।"

सो जैपोन अपना वह नया बक्सा प्रायर को दे कर अपना पुराना बक्सा उससे वापस ले कर खुशी खुशी अपने घर वापस चला गया।

अगली सुबह अपनी मास[39] कहने के बाद सारे पादरी प्रायर की रसोई के चक्कर लगाने लगे। वे आपस में बोले — "इस प्रायर ने आज हमको सुबह भी नाश्ता नहीं खिलाया और अभी भी इसकी रसोई में आग नहीं जल रही है।"

पर जो प्रायर को जानते थे वे बोले — "ज़रा इन्तजार करो। खाने के समय यह अपना बक्सा खोलेगा और हमको इतना बढ़िया खाना खिलायेगा जितना कि तुम लोगों ने कभी सोचा भी नहीं होगा।"

दोपहर को प्रायर और सारे पादरी मेज के चारों तरफ बैठे। मेज के बीच में सोने का बक्सा चमक रहा था। सबकी ऑखें उस बक्से पर ही लगी थीं।

खाने का समय आने पर प्रायर ने अपना वह सोने का बक्सा खोला तो इस बार उसमें खाने की बजाय छह बड़े बड़े आदमी डंडे ले कर बाहर आ गये और उन पादरियों को पीटने लगे।

[39] Mass is Christians' special worship

इससे प्रायर के हाथ से वह बक्सा छूट गया और वह बक्सा खुला का खुला ही नीचे फर्श पर गिर पड़ा और वे छह आदमी वहॉ बैठे सब आदमियों को मारते रहे।

इत्तफाक से जैपोन वहीं पास में ही छिपा खड़ा था। उसने वह खुला हुआ बक्सा नीचे पड़ा देख लिया तो उसको उठा कर बन्द कर दिया नहीं तो वे लोग तो वहॉ बैठे सारे लोगों को मार ही डालते। बक्सा बन्द होते ही वे छहों बड़े लोग भी गायब हो गये।

इस तरह बिशप और पादरियों को यह खाना मिला और शाम को वे अपने चर्च का काम भी नहीं कर सके।

जैपोन ने अपने दोनों बक्से अपने पास रख लिये और फिर उनको किसी को नहीं दिया। प्रायर ने भी उसके बाद जैपोन से कुछ नहीं मॉगा। उसके बाद से वे सब आराम की जिन्दगी बिताने लगे।

11 करामाती भेंटें[40]

उत्तरी हवा की यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के कैनेडा देश के पूर्वीय हिस्से केप ब्रिटन में रहने वाले लोगों में कही सुनी जाती है।

एक समय की बात है कि एक आदमी ने अपना भूसा काट कर घर ले जाने के लिये रखा कि इतने में बड़ी तेज़ हवा आयी और उसका सारा भूसा उड़ा कर ले गयी।

जब उस आदमी ने यह देखा तो उसको बहुत गुस्सा आया और वह हवाओं के देवता के पास पहुँचा और उनसे कहा — "तुमने मेरा भूसा उड़ाया है इसलिये उसके बदले में तुम्हें मुझे कुछ न कुछ जरूर देना पड़ेगा।"

हवाओं के देवता ने कहा — "यह तो न्याय की बात है। मैं तुमको तुम्हारे भूसे के बदले में कुछ न कुछ जरूर दूँगा।

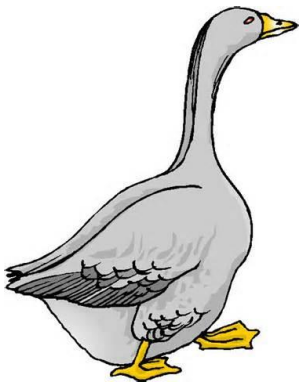

लो यह बतख लो। तुम्हें जब भी पैसों की जरूरत पड़े तो इस बतख को बस ज़रा सा दबा देना और तुम्हें इसमें से एक सोने का सिक्का मिल जायेगा।"

[40] Magical Gifts – A folktale from Cape Breton, Canada, Northern America.

वह आदमी बतख पा कर बहुत खुश हुआ और उसको ले कर अपने घर की तरफ चल पड़ा। रास्ते में उसे रात हो गयी तो उसको एक सराय में रुकना पड़ा।

वहॉ लोगों ने उससे बतख के बारे में पूछा तो उसने उनको सब सच सच बता दिया। सुबह जब वह सो कर उठा तो उसने देखा कि उसकी बतख तो चोरी हो गयी थी।

जब उसने सराय के चौकीदार से अपनी बतख के बारे में पूछा तो उसने बताया कि वह तो रात को ही कहीं उड़ गयी थी। वह आदमी बहुत दुखी हुआ और वापस अपने घर की तरफ चल दिया।

जब वह अपने घर वापस जा रहा था तो वह फिर से अपने भूसे के बारे में ही सोचता जा रहा था कि वह तो फिर बिना भूसे के और बिना बतख के ही रह गया। उसने दोबारा हवाओं के देवता के पास जाने की फैसला किया।

वह दोबारा हवाओं के देवता के पास गया और उनको अपनी बतख की कहानी सुनायी।

हवाओं के देवता ने अब की बार उसको एक चक्की[41] दी और कहा — "जब भी तुमको पैसों की जरूरत हो तो इस चक्की की मूँठ एक बार घुमा देना और यह चक्की तुमको सोना दे देगी।"

[41] Grinding stone – see the picture above

वह आदमी चक्की ले कर लौटा तो रात बिताने के लिये फिर से उसी सराय में रुका। फिर उसके साथ वही हुआ। सुबह को जब वह सो कर उठा तो उसकी चक्की चोरी हो चुकी थी। वह बहुत दुखी हुआ पर क्या करता।

वह तीसरी बार हवाओं के देवता के पास पहुँचा और जा कर उनको बताया कि उसकी तो वह चक्की भी खो गयी थी।

इस बार हवाओं के देवता ने उससे पूछा कि तुम रात कहाँ गुजारते हो?

उस आदमी ने सारी कहानी सुना दी तो हवाओं के देवता बोले — "उन्होंने तुम्हारी बतख और चक्की दोनों ही चुरा लिये हैं इसलिये अबकी बार तुम यह डंडा ले जाओ। उन लोगों के पूछने पर कहना कि मैं इससे कहता हूँ "मुझे बाँध दो, मुझे बाँध दो।"

आदमी ने वह डंडा उठाया और चल दिया। रात होने पर वह फिर उसी सराय में रुका। लोगों के पूछने पर उसने उनको वही कहा जो हवाओं के देवता ने उससे कहने के लिये कहा था।

रात को चौकीदार उसे चुराने के लिये आया तो उसने डंडे से कहा — "मुझे बाँध दो, मुझे बाँध दो।"

अब क्या था वह डंडा उठा और उसने उस कमरे में रखी सब चीज़ें बाँधनी शुरू कर दीं। अब क्योंकि चौकीदार भी उसी कमरे में

था सो उसने उसको भी बॉध दिया। फिर वह डंडा बाहर निकला और उसने और दूसरी चीजों और दूसरे लोगों को भी बॉधना शुरू कर दिया।

चौकीदार को पता ही नहीं था कि वह उसके इस काम को कैसे रोके इसलिये उसने शोर मचाना शुरू कर किया।

उस शोर से उस आदमी की ऑख खुल गयी। उसने डंडे को सॅभाला और सब आदमियों को खोला।

चौकीदार ने अपनी चोरी मान ली और उसकी बतख और चक्की दोनों ला कर उसको दे दीं। वह आदमी अपनी सब चीज़ें ले कर खुशी खुशी घर वापस आ गया।

अब वह बतख और चक्की को अपने पास रखता था और उस से सोना निकालता था और वह डंडा उसने अपने घर के एक कोने में खड़ा कर दिया था क्योंकि अब उसको उसकी जरूरत ही नहीं पड़ती थी।

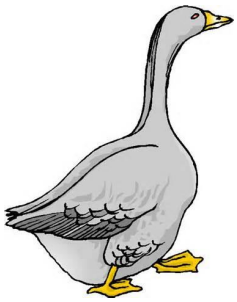

12 मिस उत्तरी हवा और मिस्टर ज़ैफिर[42]

एक बार ऐसा हुआ कि मिस उत्तरी हवा[43] को लगा कि उसको शादी कर लेनी चाहिये सो वह मिस्टर ज़ैफिर[44] के पास गयी और बोली — "ज़ैफिर जनाब, क्या आप मेरे पति बनना पसन्द करेंगे?"

मिस्टर ज़ैफिर को पैसों से बहुत लगाव था और वह स्त्रियों के बारे में ज़्यादा नहीं सोचता था सो बिना कुछ इधर उधर किये वह बोला — "नहीं मैम उत्तरी हवा, मैं तुमसे शादी नहीं कर सकता क्योंकि तुम्हारे पास तो दहेज में देने के लिये एक पैसा भी नहीं है।"

सो उत्तरी हवा ने लगातार बहुत तेज़ी से बहना शुरू किया। उसने यह भी परवाह नहीं की कि इतनी तेज़ बहने से उसके फेंफड़े भी फट सकते थे।

वह तीन दिन तीन रात लगातार बहती रही और बहती रही। इससे बरफ और तूफान आ गया। सारे खेत, पहाड़ियॉ और गॉव बरफ से ढक गये।

जब मिस उत्तरी हवा अपनी चॉदी सब तरफ फैला चुकी तब उसने ज़ैफिर से कहा — "यह लो मेरा दहेज जो आप कह रहे थे कि मेरे पास दहेज नहीं था। क्या इससे काम चलेगा?"

---

[42] Miss North Wind and Mr Zephir (Story No 119) – a folktale from Italy from its Abruzzo area. Adapted from the book : "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

[43] Translated for the word "North Wind" – it is very cold arctic air.

[44] In Italian language very light warm breeze is called Zephyr

इसके बाद वह फिर तीन दिन के लिये आराम करने चली गयी।

मिस्टर ज़ैफिर ने उसके दहेज की तरफ ऑख उठा कर भी नहीं देखा। बस उसने अपने कन्धे उचकाये और बहने लगा। वह भी तीन दिन और तीन रात तक बहता रहा और बहता रहा और इस बीच सारे खेतों मैदानों और पहाड़ियों की सारी बरफ गरमी के मारे पिघल गयी।

जब मिस उत्तरी हवा ने कुछ देर आराम कर लिया तो वह उठी। उसने देखा कि उसका तो सारा दहेज चला गया है। उसकी फैलायी हुई सारी बरफ पिघल गयी थी।

वह मिस्टर ज़ैफिर के पास दौड़ी गयी तो उसने हॅस कर मिस उत्तरी हवा से पूछा — "मिस उत्तरी हवा, तुम्हारा दहेज कहॉ है? क्या तुम अभी भी यही चाहती हो कि मैं तुम्हारा पति बन जाऊॅ?"

मिस उत्तरी हवा मुॅह लटका कर वहॉ से चली आयी — "नहीं मिस्टर ज़ैफिर मैं कभी आपकी पत्नी बनना पसन्द नहीं करूॅगी क्योंकि आपने तो मेरा इतना सारा दहेज एक ही दिन में खत्म कर दिया।

13 उत्तरी हवा और सूरज[45]

मौसम की यह लोक कथा यूरोप के यूनान देश की ईसप की कहानियों से ली गयी है।

कुछ दिनों से उत्तरी हवा अपनी तेज़ सॉस फेंक फेंक कर सड़क के किनारों से पेड़ों से गिरी सूखी पीली पत्तियॉ साफ करने में लगा हुआ था। कभी कभी वह आसमान में तैरते बादलों को उछाल उछाल कर चिढ़ाता भी रहता था।

इस काम में उसको बड़ा मजा आ रहा था। कभी वह अपनी सॉस इधर फेंक देता कभी उधर। कभी वह इससे अपनी शान बघार लेता कभी उससे। खास करके जब वह सूरज को देखता तो उसकी यह इच्छा और तेज़ हो जाती।

वह एक लम्बी सॉस लेता उसे अपने मुँह में भरता और सूरज की तरफ फेंक देता। इस तरह से वह अपनी पुरानी लड़ाई को बनाये रखने के लिये यह सब करता रहता।

सूरज जमीन को गरम करने के लिये और कोहरे को हटाने के लिये मुस्कुरा कर नीचे धरती की तरफ देखता। वह झीलों और नदियों के जमते हुए पानी को गरम करता जब तक वह तंग करने

---

[45] North Wind and the Sun – a fable from Greece, Europe. From Aesop's Tales.
Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=192
Retold by Mike Lockett.
[My Note: The Greek historian Herodotus mentioned in passing that "Aesop the fable writer" was a slave who lived in Ancient Greece during the 5th century BC]

वाली उत्तरी हवा लोगों को तंग करने नहीं आ जाता। उसके आने के बाद सूरज की मुस्कुराहट तब तक के लिये चली जाती जब तक कि उत्तरी हवा वहॉ से चला नहीं जाता।

जब उत्तरी हवा वहॉ फिर आता तो वह सूरज के पास पहुँच कर उससे कहता कि "देखो मैं कितना मजबूत और ताकतवर हूँ और तुम? तुम क्या हो।" और उसको कुछ कुछ बोलता रहता।

सूरज भी उसकी बात और उसके दिये हुए खराब नामों को न सुनने का बहाना करता हुआ आसमान में चलता रहता। उसके लिये कोई भी दिन कहीं ज़्यादा अच्छा होता अगर वह बिना उत्तरी हवा के चलता रहता।

पर उत्तरी हवा की तरफ ध्यान न देने से तो काम नहीं बनता था। वह तो अपनी ताकत दिखाने के लिये बस बार बार सूरज के पास आ जाता और कभी उसके मुँह पर धूल के बादल फेंक जाता तो कभी उसके रास्ते में धूल भरी हवा उड़ा जाता। इससे आसमान में उसका रास्ता रुक जाता।

सूरज को मालूम था कि यह कुछ ही समय की बात है क्योंकि अगर वह चाहता तो वह किसी भी समय उससे हमेशा के लिये अपनी लड़ाई खत्म भी कर सकता था कि उन दोनों में कौन ज़्यादा ताकतवर था।

एक दिन सूरज रुका और रुक कर उसने उत्तरी हवा की तरफ देखा। सूरज को मालूम था कि उत्तरी हवा काफी ताकतवर था।

क्योंकि उत्तरी हवा ने यह सब सूरज को कई मौकों पर बड़ी अच्छी तरह से समझा दिया था कि वह उससे ज़्यादा ताकतवर है और सूरज ने उसकी ताकत की काफी तारीफ भी की थी पर उत्तरी हवा को सूरज से अपनी तारीफ से कुछ और ज़्यादा की उम्मीद थी।

वह चाहता था कि सूरज इस बात को स्वीकार करे कि वह उत्तरी हवा से कम ताकतवर था।

सूरज के लिये उत्तरी हवा के बराबर की ताकत को स्वीकार करना भी ठीक था पर यह तो हो ही नहीं सकता था कि वह उत्तरी हवा के अहम को सन्तुष्ट करने के लिये उत्तरी हवा से यह कहे कि उत्तरी हवा उससे ज़्यादा ताकतवर है।

सो एक दिन फिर इस बात को ले कर बहस शुरू हुई कि दोनों में कौन ज़्यादा ताकतवर है। उस दिन उत्तरी हवा ज़ोर से बहता हुआ सूरज के पास आया और बहुत शोर के साथ उसके सामने रुक गया।

बजाय उत्तरी हवा को अपनी जलती हुई निगाहों से देखने के सूरज ने अपने स्वभाव के अनुसार उसकी तरफ देख कर अपनी पलकें झपकायीं और मुस्कुरा दिया।

उत्तरी हवा उसके कानों में फुसफुसाया "गुड मौर्निंग सूरज।"

इस बार वह सूरज से शान्ति से बात करना चाहता था। वह बोला "तुम तो आज वाकई बहुत चमकीले लग रहे हो। मुझे लगता नहीं कि तुमने इस बात पर ध्यान भी दिया कि नहीं कि मैंने कल ही

सड़कों का सारा कूड़ा उड़ा कर फेंक दिया। मुझे मालूम नहीं कि ऐसा कोई और भी है जो एक दिन में इतना सारा काम कर सकता है।"

सूरज ने मान लिया कि वह बहुत अच्छा था पर फिर भी वह उससे बोला "पर इस दुनियॉ में जहॉ हम रहते हैं हम सब लोगों की अपनी अपनी एक जगह है।"

सूरज के इतना नम्र होने पर ध्यान न देते हुए उत्तरी हवा उससे फिर बोला "अच्छा तो अब यह बताओ कि तुम यह बात कब मानने जा रहे हो कि मैं तुमसे ज़्यादा ताकतवर हूॅ।" इस समय वह अपनी पुरानी बहस फिर से शुरू करने के लिये बिल्कुल तैयार था।

पर उस दिन सूरज उसको उसकी इस बात का कुछ जवाब देता कि उसने एक सीटी की आवाज सुनी। उसने चारों तरफ देखा तो उसको एक आदमी सड़क पर जाता हुआ दिखायी दिया।

पर वह आदमी तो उन दोनों में से किसी की तरफ भी ध्यान नहीं दे रहा था, न तो सूरज की तरफ और न ही हवा की तरफ। वह तो उनके झगड़े से बिल्कुल ही बेखबर अपनी धुन में सीटी बजाता चला जा रहा था।

पर उसकी सीटी ने सूरज का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया था। जैसे ही उसने नीचे देखा तो देखा कि वह आदमी तो एक कोट पहने हुए था।

उसके कोट को देख कर उसके मन में एक विचार आया कि आज इस हवा को अच्छा सबक सिखाया जा सकता है ताकि यह हमेशा के लिये अपनी लड़ाई खत्म कर दे।

सो वह बोला — "मैं यह बात मान सकता हूँ कि तुम मुझसे ज़्यादा ताकतवर हो अगर तुम मुझसे मुकाबले के लिये तैयार हो तो।"

अब उत्तरी हवा तो बहुत घमंडी था इसलिये वह तो उसके इस मुकाबले के लिये मना कर ही नहीं सकता था सो वह बोला — "मैं तुमको किसी भी मुकाबले में हरा सकता हूँ। बोलो मुकाबला बोलो।"

सूरज बोला — "ठीक है तो फिर बस यही शर्त रही कि जो कोई भी यह मुकाबला जीतेगा वही सबसे ज़्यादा ताकतवर समझा जायेगा।"

वह फिर आगे बोला — "देखो यह आदमी सड़क पर जा रहा है। इसने कोट पहना हुआ है। जो कोई भी इसका कोट उतरवा देगा वही ज़्यादा ताकतवर होगा।"

उत्तरी हवा बड़े घमंड से बोला — "ठीक है तो यही शर्त रही।"

अब उत्तरी हवा तो बड़े से बड़े पेड़ तक गिरा सकता था यह हल्का सा कोट उसके लिये क्या चीज़ थी।

तुरन्त ही वह आसमान से नीचे कूद गया और उसने उस आदमी कोट के नीचे से एक बहुत तेज़ फूँक मारी जिससे उसका कोट काफी ऊपर को उठ गया और उसके चेहरे पर जा कर लगा। उस आदमी ने अपना कोट नीचे किया और अपना चलना जारी रखा।

यह देख कर उत्तरी हवा को गुस्सा आ गया और वह और बहुत तेज़ और ठंडा हो कर चला। आदमी ने अब अपना कोट और कस कर लपेट लिया और उसका कालर भी ऊपर उठा कर अपनी गरदन से लपेट लिया।

तीसरी बार वह और तेज़ चला पर उसकी यह तेज़ी भी उसका कोट उतरवाने में कुछ काम न कर सकी बल्कि उसने तो ठंड के मारे अपने हाथ भी कोट के अन्दर ढक लिये और अपने कोट को अपने शरीर के चारों ओर और कस कर लपेट लिया।

अब सूरज की बारी थी। सूरज चमका तो गरम हो गया। ठंडी हवा के बाद यह गरमी उस आदमी को अच्छी लगी। उसने अपना सिर ऊपर उठाया और सूरज की तरफ देखा।

सूरज थोड़ा और चमका तो उस आदमी ने अपनी बाँहें कोट में से बाहर निकाल लीं। सूरज चमकता रहा तो उसकी गरमी से उसने अपनी बाँहें नीचे कर लीं और कोट को छोड़ दिया।

सूरज थोड़ा और चमका तो उसने अपने कोट के बटन खोल दिये। और फिर सूरज थोड़ा और चमका तो उसने अपना कोट

निकाल दिया और ठंडा होने के लिये एक पेड़ की छॉह में जा कर बैठ गया।

सूरज ने उत्तरी हवा से कुछ नहीं कहा। बस उसने उत्तरी हवा की तरफ मुस्कुरा कर देखा, नम्रता से घूमा और अपने रास्ते चल दिया।

अब किसी को कुछ कहने की जरूरत नहीं थी। उन दोनों को पता चल गया था कि सूरज के नम्र व्यवहार ने वह कर दिखाया जो उत्तरी हवा का ठंडा और सख्त व्यवहार नहीं कर सका।

14 सीधा आदमी और उसकी चालाक पत्नी[46]

एक बार की बात है कि रूस के एक गॉव में एक किसान और उसकी पत्नी रहते थे। वे बहुत गरीब थे। उनमें पति तो बछड़े की तरह सीधा था जबकि उसकी पत्नी सॉप की तरह से चालाक थी। वह अपने पति को छोटी छोटी बातों पर बुरा भला कहती रहती थी।

एक दिन डबलरोटी बनाने के लिये वह अपनी पड़ोसन से कुछ मक्का मॉग कर लायी। वह मक्का उसने अपने पति को पिसवाने के लिये चक्की पर ले जाने के लिये दी।

चक्की वाले ने मक्का पीस दी पर उससे उनकी गरीबी की वजह से उसकी पिसाई के कुछ भी पैसे नहीं लिये। किसान अपना आटे से भरा बरतन सिर पर रख कर घर लौटने लगा कि अचानक बहुत तेज़ हवा चल निकली और एक पल में ही बरतन में से उसका सारा आटा उड़ गया।

वह घर गया और सारी बात अपनी पत्नी को बतायी। पत्नी तो यह सुन कर बहुत गुस्सा हो गयी। उसने अपने पति को केवल बहुत

[46] The Mild Man and His Cantankerous Wife – a folktale from Russia, Asia.
Taken from the Web Site :
https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_8.html
From the Book “The Russian Garland: Being Russian Folk Tales”, Edited by Robert Steele. NY: Robert McBride. 1916. 17 tales collected from various booklets.

डॉटा ही नहीं बल्कि उसको बड़ी बेरहमी से पीटा भी। वह उसको बराबर धमकी भी देती रही।

आखिर जब वह यह करते करते थक गयी तब उसने उसको हवा के पास जाने के लिये कहा जिसने उनका आटा उड़ाया था और कहा कि वह हवा से या तो उसके बदले में पैसे मॉग कर लाये या फिर उतना ही आटा ले कर आये जितना कि उसके बरतन में था।

बेचारा किसान जिसकी हड्डियॉ अब तक पत्नी की मार से दुख रही थीं रोता हुआ और अपने हाथों को मलता हुआ घर से बाहर चल दिया। पर वह किधर को जाये यह उसको पता नहीं था।

चलते चलते आखिर वह एक बड़े अँधेरे जंगल में आ गया जिसमें वह इधर उधर घूमता रहा। काफी देर तक इधर उधर घूमने के बाद उसको एक बुढ़िया मिली।

वह बोली — "ओ भले आदमी तुम कहॉ जा रहे हो और यहॉ इस अँधेरे जंगल में अपना रास्ता कैसे ढूँढोगे। तुम इस देश में आये ही क्यों हो जहॉ कोई चिड़िया भी नहीं उड़ती और कोई जंगली जानवर भी कभी कभी ही दिखायी देता है।"

आदमी बोला — "ओ मेरी अच्छी मॉ, मुझे यहॉ जबरदस्ती खदेड़ा गया है। मैं कुछ मक्का ले कर उसे पिसवाने के लिये चक्की पर गया था।

जब उसका आटा पिस गया तो मैंने उसको अपने बरतन में भर लिया और घर जाने लगा कि तभी बहुत ज़ोर से हवा चली और वह

मेरे बरतन का सारा आटा उड़ा कर ले गयी। जब मैं बिना आटे के घर पहुँचा और अपनी पत्नी को सब बताया तो उसने मुझे खूब डाँटा और खूब मारा।

फिर उसने मुझे हवा को ढूँढने भेजा और कहा कि मैं उससे कहूँ कि या तो वह मेरा आटा वापस करे या फिर उसके बदले में पैसे दे। इसलिये मैं हवा को ढूँढता हुआ इधर उधर घूम रहा हूँ। मुझे यह भी नहीं पता कि वह मुझे कहाँ मिलेगा।"

बुढ़िया बोली — "आओ मेरे साथ आओ। मैं हवाओं की माँ हूँ। मेरे चार बेटे हैं - पहला है पूर्वी हवा, दूसरा है दक्षिणी हवा, तीसरा है पश्चिमी हवा और चौथा है उत्तरी हवा। अब मुझे यह बताओ कि कौन से हवा ने तुम्हारा आटा उड़ाया है?"

किसान बोला — "माँ दक्षिणी हवा ने।"

तब बुढ़िया उस किसान को उस जंगल में और अन्दर तक ले गयी और एक छोटे से मकान तक ले आयी और बोली — "देखो मैं यहाँ रहती हूँ ओ किसान, तुम यहाँ कम्बल लपेट कर अँगीठी के पास बैठ कर थोड़ा गरम हो मेरे बच्चे अभी आते ही होंगे।"

"पर कम्बल में लिपट कर क्यों?"

"क्योंकि मेरा बेटा उत्तरी हवा बहुत ठंडा है वह जब आयेगा तो उसके आने से तुम जम जाओगे।"

कुछ देर बाद ही उस बुढ़िया के बेटे घर आने लगे। सबसे बाद में आया दक्षिणी हवा। बुढ़िया ने किसान को अँगीठी के पास से

बुलाया और अपने बेटों से कहा — "दक्षिणी हवा मेरे बेटे, तुम्हारे खिलाफ एक शिकायत आयी है। तुम गरीब लोगों को क्यों परेशान करते हो। तुमने इस आदमी के बरतन से इसका आटा उड़ा दिया है। तो या तो इसको उसके बदले में पैसा दो या फिर जैसे तुम चाहो वैसे उसका बदला चुकाओ।"

दक्षिणी हवा ने जवाब दिया — "ठीक है मॉ। मैं इसके आटे के बदले में इसको कुछ दूँगा।"

फिर उसने किसान को बुलाया — "सुनो ओ मेरे छोटे किसान लो यह टोकरी लो। इस टोकरी में वह सब कुछ है जिसकी इच्छा तुम कर सकते हो – पैसा रोटी सब तरीके का खाना पीना।

तुमको इससे बस यह कहना है "ओ टोकरी तुम मुझे यह दो या वह दो।" और यह टोकरी तुम्हारी हर इच्छा पूरी कर देगी। तुमको तुम्हारे आटे का बदला मिल गया अब तुम घर जाओ।"

किसान ने दक्षिणी हवा को सिर झुकाया और अपने घर की तरफ चल दिया। जब वह अपने घर वापस आया तो उसने वह टोकरी अपनी पत्नी को दे दी — "लो प्रिये यह टोकरी लो। यह टोकरी तुम्हारे लिये है। इसमें तुम्हारे लिये वह सब कुछ है जिसकी इच्छा तुम कर सकती हो। बस इससे वह मॉग लो और यह टोकरी तुम्हें वह सब कुछ दे देगी।"

सो उस भली स्त्री ने वह टोकरी ली और बोली — "मुझे रोटी बनाने के लिये बहुत अच्छा सा आटा दो।"

तुरन्त ही टोकरी ने उसको उतना ही आटा दे दिया जितना उसको चाहिये था। फिर उसने उस टोकरी से कभी यह मॉगा तो कभी वह मॉगा और उस टोकरी ने उसको वह सब कुछ पल भर में ही दे दिया जो भी उसने उससे मॉगा।

कुछ दिनों के बाद उधर से एक कुलीन आदमी गुजरा तो उस भली स्त्री ने अपने पति से कहा कि वह उसको अपने घर शाम को खाना खाने के लिये बुलाये। और अगर वह उसे नहीं लाया तो वह उसको इतना पीटेगी कि वह अधमरा हो जायेगा।

किसान बेचारा अपनी पत्नी की मार से डरता था सो वह गया और उस कुलीन आदमी को शाम के खाने के लिये बुलाने के लिये चला गया।

इस बीच उस भली स्त्री ने उस टोकरी से बहुत सारे तरीके के खाने और पीने की चीज़ें मॉगीं और उनको मेज पर सजा दिया और खुद वह खिड़की के पास बैठ कर अपने हाथ अपने गोद में रख कर अपबे पति और मेहमान का धीरज से इन्तजार करने लगी।

कुलीन आदमी को इस तरह से उस किसान के बुलावे को पा कर बहुत आश्चर्य हुआ। वह हॅसा और किसान के साथ उसके घर नहीं गया।

बल्कि बजाय इसके कि वह खुद किसान के घर जाता उसने अपने नौकरों को जो उसके साथ थे हुकुम दिया कि वे किसान के

साथ उसके घर खाना खाने जायें और उसको आ कर बतायें कि उसने उनके साथ कैसा बरताव किया।

मालिक का हुकुम पा कर कुलीन आदमी के नौकर किसान के साथ उसके घर चले गये।

जब वे उसके मकान में घुसे तो वे तो बहुत ही आश्चर्यचकित रह गये। क्योंकि उसके मकान से तो ऐसा लगता था कि वह बहुत गरीब होगा पर उसके खाने की मेज पर जो खाना लगा था उससे तो वह ऐसा लगता था जैसे वह कोई बहुत बड़ा आदमी हो। वे खाना खाने बैठ गये और बहुत आनन्द से खाना खाया।

पर उन्होंने देखा कि किसान की पत्नी को जब भी कभी भी कोई भी खाना चाहिये होता था तो वह एक टोकरी से मॉग लेती थी और जो वह मॉगती थी वह उसको तुरन्त ही मिल जाता था।

यह देख कर वे सब वहॉ से एक साथ नहीं गये। उन्होंने किसान और उसकी पत्नी के जाने बिना छिप कर अपने एक साथी को घर भेजा ताकि वह जल्दी से जल्दी वैसी ही एक टोकरी ले कर वहॉ आये।

इस पर वह आदमी तुरन्त ही दौड़ा गया और वैसी ही एक टोकरी ले कर वहॉ लौटा जैसी कि उस किसान की पत्नी के पास थी। और जब वह उस टोकरी को ले कर लौटा तो मेहमानों ने चुपके से किसान की टोकरी उठायी और अपनी लायी टोकरी उसकी जगह रख दी।

फिर उन्होंने किसान और उसकी पत्नी से विदा ली और अपने मालिक के पास लौट गये। उन्होंने उसे जा कर बताया कि उसने उनकी कितने अच्छे तरीके से खातिरदारी की थी।

उनके जाने के बाद किसान की पत्नी ने बचा हुआ खाना फेंक दिया और अगले दिन के लिये ताजा खाना बनाने की सोची।

सो अगले दिन वह टोकरी के पास गयी और उससे खाना मॉगना शुरू किया जो उसको चाहिये था पर उसने देखा कि उसकी टोकरी ने तो उसको कुछ भी नहीं दिया।

तो उसने अपने पति को बुलाया और बोली — "ओ बूढ़े सफेद दाढ़ी वाले, यह तुम मेरे लिये किस तरह की टोकरी ले कर आये हो। यह ठीक है कि इसने हमारी एक बार सेवा की है पर ऐसी टोकरी का क्या फायदा जो अब और कुछ नहीं देती।

तुम वापस हवा के पास जाओ और उससे हमारा आटा वापस करने के लिये कहो नहीं तो मैं तुम्हें मार मार कर मार दूँगी।"

सो बेचारा किसान हवा के पास फिर से गया। जब वह हवाओं की मॉ बुढ़िया के पास पहुँचा तो उसने उससे अपनी पत्नी की शिकायत की। बुढ़िया ने कहा कि वह उसके बेटे का इन्तजार करे वह अब जल्दी ही आने वाला होगा।

दक्षिण हवा जल्दी ही आ गया तो किसान ने अपनी पत्नी की शिकायत उससे भी की। हवा बोला — "ओ बूढ़े मुझे बहुत अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि तुम्हारी पत्नी बहुत ही खराब

और नीच है फिर भी मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। इसके बाद वह तुम्हें फिर कभी नहीं मारेगी।

तुम यह सन्दूकची लो और घर जाओ और जब तुम्हारी पत्नी तुम्हारी पिटायी करे तो अपने सामने यह सन्दूकची रख लेना और ज़ोर से बोलना "पॉच सन्दूकची से बाहर निकलो और मेरी पत्नी को मारो।" और जब वे उसको खूब मार चुकें तब बोलना "पॉचों सन्दूकची के अन्दर जाओ।"

किसान ने हवा को बहुत नीचे तक सिर झुकाया और अपने घर चला गया।

जब वह घर आया तो वह बोला — "प्रिये देखो अबकी बार मैं तुम्हारे लिये बजाय टोकरी के एक सन्दूकची ले कर आया हूँ।"

यह सुन कर तो वह भली स्त्री और ज़्यादा गुस्से से भर गयी और बोली — "ओह सन्दूकची, वह तो ठीक है पर मैं इसका करूँगी क्या। तुम अपना आटा वापस क्यों नहीं लाये।"

कह कर उसने एक लोहे की सलाख उठा ली और उससे बूढ़े को मारने जा ही रही थी कि बूढ़ा चुपचाप सन्दूकची के पीछे खड़ा हुआ और बोला "पॉच सन्दूकची से बाहर निकलो और मेरी पत्नी को मारो।"

पल भर में पॉच नौजवान उस सन्दूकची में से बाहर निकल पड़े और उसकी पत्नी को मारने लगे। और जब पति ने देखा कि उन्होंने उसकी पत्नी को काफी मार लिया और उसकी पत्नी उससे दया की

भीख माँगने लगी तो वह बोला "पाँचों सन्दूकची के अन्दर जाओ।" तुरन्त ही वे पाँचों सन्दूकची में अन्दर चले गये।

अब किसान ने अपनी टोकरी के नुकसान के बारे में सोचा जिसे कुलीन आदमी के नौकर चुरा ले गये थे तो उसने सोचा कि वह उस कुलीन आदमी के पास जायेगा और अपने नुकसान की भरपाई करेगा। वह उसे लड़ने के लिये चुनौती देगा। सो वह उस कुलीन आदमी के पास पहुँच गया।

वहाँ जा कर उसने उसको लड़ाई की चुनौती दी तो वह आदमी किसान की बेवकूफी पर हँसा फिर भी उसने उसको लड़ाई के लिये मना नहीं किया क्योंकि वह भी कुछ खेल खेलना चाहता था। उसने किसान को मैदान में आने के लिये कहा।

किसान ने भी अपनी सन्दूकची अपनी बगल में दबायी और मैदान में आ पहुँचा और कुलीन आदमी का इन्तजार करने लगा।

कुलीन आदमी अपने कई नौकरों के साथ घोड़े पर सवार हो कर वहाँ आ पहुँचा। और जब वह किसान के पास आया तो उसने अपने नौकरों को मजाक में हुकुम दिया कि वह किसान को मारें।

किसान ने देखा कि वे सब उसकी हँसी उड़ा रहे थे और उसे मार रहे थे। यह देख कर वह कुलीन आदमी से बहुत गुस्सा हो गया और बोला — "आइये जनाब और मेरी टोकरी इसी समय मुझे वापस कर दीजिये नहीं तो आप सबका बहुत बुरा होगा। मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ।"

फिर भी उन्होंने उसकी पिटायी करनी नहीं छोड़ी तो वह चिल्लाया "पॉच सन्दूकची से बाहर निकलो और इन सबको अच्छी तरह से मारो।"

तुरन्त ही उस सन्दूकची से पॉच मजबूत नौजवान बाहर निकल पड़े और उन्होंने कुलीन आदमी के नौकरों की पिटायी करनी शुरू कर दी।

कुलीन आदमी को लगा कि वे तो उन लोगों को मार ही डालेंगे सो वह अपनी पूरी ताकत लगा कर बोला — "रुक जाओ रुक जाओ ओ मेरे अच्छे दोस्त रुक जाओ, सुनो तो। तुम अपने आदमियों को रोको और इनको फिर से सन्दूकची में बन्द करो। मैं तुम्हारी टोकरी अभी देता हूँ।"

इस पर किसान बोला — "पॉचों सन्दूकची के अन्दर जाओ।"

यह सुन कर सन्दूकची में से निकले पॉचों आदमी सन्दूकची के अन्दर चले गये। कुलीन आदमी ने अपने नौकरों को किसान की टोकरी लाने का और उसको किसान के देने का हुकुम दिया। किसान ने अपनी टोकरी ली और अपने घर वापस चला गया।

उसके बाद से वह हमेशा अपनी पत्नी के साथ शान्ति से रहा और गरीब भी नहीं रहा क्योंकि अब उसके पास उसकी टोकरी थी न।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शीबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**